श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी ग्रंथमाला ग्रंथांक ५९

शास्त्रविशारद योगनिष्ठ जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागर
सूरिजी विरचित

देववंदन स्तुति स्तवन संग्रह.

साणंदना श्रीसागरगच्छनी प्रेरणा अने सहायथी
छपावी प्रसिद्ध करनार,
श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मंडल
हा. वकील मोहनलाल हीमचंद.
मु. पादरा.

आवृत्ति पहेली. प्रत १०००.

संवत १९७८ सन १९२२

किंमत रु. ०—४—०.

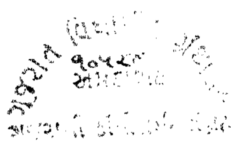
आ पुस्तक मळवानुं ठेकाणुं—

वकील मोहनलाल हीमचंद.

[गुजरात] पादरा.

शा. आतमाराम खेमचंद.

साणंद.



श्री प्रजाहितार्थ मुद्रालय प्रेसमां पटेल, डाह्याभाई दलपतरामे
छाप्युं. ठे० शाहापुर नवीपोळ—अमदावाद.

वक्तव्य.

ॐ अर्हंमहावीरायनमः

श्री " देववंदन स्तुति स्तवन संग्रह " एवुं आ पुस्तकनुं नाम पाड्युं छे. साणंदना शेठ, उमेद महेताना सुपुत्रो–त्रिभोवनदास तथा चुनीलाल तथा पौत्र, शा. दलसुखभाइ गोविंदनी प्रेरणाथी सं. १९७७ मां साणंदमां चोमासुं कर्युं हतुं त्यारे देववंदन ' स्तुति ' पूजाओनी रचना करवानो प्रारंभ कर्यो हतो. देववंदन अने स्तुतियोनो छन्द खास साणंदमां रचायो छे, तथा बीजनुं स्तवन त्यांथी आरंभीने वर्धमान तप ओळी स्तवन सुधीनो स्तवन भाग पग साणंदमां रचायेल छे. पहेली चोवीशी. सं. १९६४ ना माणसाना चोमासामां आषाढ मासमां रचाइ छे अने बीजी चोवीशी. सं. १९६५ नी सालमां डभोइमां श्रीमद् उपाध्याय यशोविजयनी देरीमां फाल्गुन पूर्णिमाने दिन रचेली छे. आ बे चोवीशीओ पहेलां साणंद जैनोदय बुद्धिसागर समाज तरफथी छपाइ हती छतां स्तवनोनो उपयोग विशेष प्रमाणमां थाय अने पुस्तक भेगो जळवाइ रहे एम जाणी आ पुस्तकमां दाखल करवामां आवी छे. पाछळनां बे स्तवनो मेसाणामां हालना चातुर्मासमां रचायेलां छे. विविध रुचिवाळा जीवो छे. सर्व जीवोनी भिन्न भिन्न रुचि छे. भक्तिनां स्तवनो पैकी जेने जेवो अधिकार होय छे तेने तेवुं स्तवन रुचे छे. स्तवनो पैकी केटलांक अन्यनी रुचिनी प्रेरणानुसारे रचायलां छे अने केटलांक स्वानुभव

उद्गारावेशथी रचेल छे. पूर्व मुनिवरोए देववंदन स्तुति स्तवनो वगेरेनी रचना करी छे अने ते सारी छे तो नवीन देववंदनादिनी रचना करवानी शी जरुर हती ? एम केटलाक प्राचीन प्रियवादीओ तरफथी कहेवामां आवे तेना उत्तरमां जणाववानुं के—मनुष्यो सर्वे कंइ प्राचीन प्रिय नथी तथा सर्वे कंइ वर्तमान प्रिय नथी. सर्व मनुष्योनी भिन्न भिन्न रुचि छे तेथी भूतमां अने वर्तमानमां गमे तेवां स्तवनो वगेरेनी रचना करेली होय छे अगर कराय छे तोपण ते तेओ पोताना योग्य स्तवनने पसंद करे छे. कोइने द्रव्यानुयोगनां स्तवनो रुचे छे, कोइने स्वामीसेवक भावनां अने तेमां पण अत्यंत पश्चात्ताप करवामां आव्यो होय एवां स्तवनो रुचे छे. कोइने प्रभुना बाह्य अतिशयवाळां स्तवनो रुचे छे, कोइने आंतर अतिशयवाळां स्तवनो रुचे छे. एम भिन्न भिन्न दशावाळा जीवोने भिन्न भिन्न स्तवनो रुचे छे अने ते स्वदशाए पसंद करे छे एम तेमनी स्वरुचि स्वतंत्रता छे. ते कोइनाथी छीनवी लेवाय तेम नथी. जेने जेमां रस पडे ते ते स्तवनो वगेरेथी प्रभुनी भक्ति करीने आत्मानी शुद्धि करे. बाल मध्यम अने ज्ञानी एम त्रण प्रकारना जीवो होय छे. एक मनुष्यमां त्रण दशाओ प्रगटे छे. बाल्यकालमां जे स्तवनो रुचे छे ते मध्यम दशामां रुचतां नथी अने मध्यम दशामां जे रुचे छे ते ज्ञानी दशामां रुचतां नथी. कोइने भावमुख्य स्तवनो रुचे छे. कोइने साहित्य कलाविज्ञान दृष्टिवाळां स्तवनो वगेरे रुचे छे. कोइने आत्मज्ञान गर्भित स्तवनो रुचे छे. तेथी स्तवनो अमुक रीति कलाएज

रचायेलां होवां जोइए एवो सार्वदेशीय नियम सिद्ध थतो नथी, कारणके तेमां रुचिभावनी मुख्यता छे अने तेवी स्वतंत्रतापर कोइनाथी साहित्य विषयक कायदाओने घडीने अंकुश मूकी शकातो नथी. लघु बालकना अव्यक्त शब्दो-कालाघेला शब्दो पण तेना मावापने प्रिय लागे छे. पोताने जे प्रिय न लागतां होय एवां स्तवनो वगेरे अवश्य अन्योने प्रिय लागे छे अने तेथी तेओनी भावना खीले छे तेथी त्यां अमुक नियम कलाविधान कायदाओनी परतंत्रताने कोइ करे नहि. सत्य रहस्य तो ए छे के जेने जे रुचे ते ग्रहे, अने न रुचे तेनुं खंडन न करे. भक्तिविषय स्तवनोथी आत्मानी अशुद्धि तो थती नथी तेथी तेना खंडननी माथाकूटमां पडवानी जरुर रहेती नथी. स्तवनो वगेरे कर्तानुं हृदय छे. उद्गारवाळां स्तवनो वगेरेमां तेना रचयितानी दशानुं प्रतिबिंब पडया विना रहेतुं नथी. समान दशावाळाने स्वहृदय भाव सरखां स्तवनो रुचे छे तेथी अमुक सारुं वा अमुक नरसुं कहेवानो सार्वजनिक दृष्टिए अधिकार नथी. कलाविधान स्तवनसाहित्यज्ञोमां भिन्न भिन्न विषयरुचि होय छे तेथी एक सरखो कायदो सर्वने लागु पडतो नथी. भावनगरना रहीश. सुश्रावक कुंवरजीना पुत्र परमानंद, जो आवी दृष्टिए स्तवनोनी प्रियतानो विचार करशे तो तेओ अनेक दृष्टियोनी अपेक्षानुं स्तवनसाहित्य स्वरुप विचारीने शांत सापेक्ष दृष्टिवाळा बनशे. पोतानी दृष्टिए जे पसंद पडे छे ते कंइ सर्वनी दृष्टियो माटे नथी. पोताने जे अपेक्षाए सत्य लागे छे ते कंइ सर्वने सत्य लागे

नहीं, तेथी पोताने जे प्रिय सत्य न लागे तेनुं खंडन करवा मंडीजवुं ते एकांत संकुचित निरपेक्ष दृष्टि छे. भाषा, राज्य, कोम, प्रजा, धर्म-पर, जो सख्त नियम पडे छे तो तेथी भाषा वगेरेनुं मृत्यु थाय छे. संस्कृत भाषापर घणा नियम कायदा थया तेथी ते जीवती भाषा रही नहीं, तेम स्तवनो वगेरे पर जो हृदयभाव दाबनाना नियमो पडे तो दुनियामांथी औद्गारिक स्तवनोवाळी भक्तिनो नाश थाय एम अनुभवीओ जाणे छे. भावपर कायदो ते जीवतां मृत्यु छे. जेने जे भाव वाळां स्तवनो वगेरे रुचे ते ग्रहण करे एवी भावनावाळा स्वतंत्र भक्तोना हृदयोमांथी उत्तम उदार भक्तिरसनी गंगाओ प्रगटवानी आशा राखी शकीए. वस्तुतः खरां स्तवनो तो ए छे के प्रभुनी स्तवना करवामां अंतरमांथी तेकाले स्वतः भक्तिरसमय गद्य वा पद्य कंइ बोलाय. एवां हार्दिक रसमय स्तवनो तेज प्रभुनां ताजां स्तवनो छे. एवां स्तवनो तुर्त बनावीने गानारा ज्ञानी भक्त कवियो होय छे. बालजीवोनी एवी दशा होती नथी तेथी तेओ अन्योनां रचेलां अने पोताने पसंद पडे एवां स्तवनोने मुखे करी प्रभुनी आगळ गाय छे अने आनंद माने छे.

जे स्तवनो वगेरेनो अर्थ समजवामां आवे अने ते गातां शरीरमां भक्तिभावनां आंदोलनो प्रगटे, तन विकसे. मन विकसे, आंखो विकसे, आत्मामां रसनां झरणो प्रगटे एवां स्तवनो गावां अगर तत्काल प्रभुनी आगळ नवां बनावीने गावां–मातृभाषामां रचेल स्तवनो,

तुर्त समजाय छे माटे मातृभाषामां स्तवनो, स्तुतियो वगेरेनी रचना करवीते अत्यंत उपयोगी छे. शब्द बोलतांनी साथे सहेजे अर्थ समजाय अने हृदयमां भक्तिभावप्रगट थाय एवां स्तवनो अने स्तुतियोने बोलवी जोइए. शब्दना अर्थनी मालुम न पडे अने पोपटनी पेठे फक्त बोली जवाय एवां चैत्यवंदनस्तोत्र स्तवन वगेरेथी भक्तिरस प्रगटतो नथी, भक्तिभावना प्रगटती नथी, माटे जे स्तवनो वगेरेनो परिपूर्ण अर्थ समजाय ते स्तवनोने मुखे करवां अने तद्द्वारा प्रभुनी स्तवना करवी. जे स्तवन वगेरेथी भक्ति करनारने भक्ति आनंदरस प्रगटे तेणे ते स्तवन वगेरेनुं गान करवुं. बाह्य पौद्गलिक सुरनरनी ऋद्धि पदवी मेळववानी इच्छाए स्तवनादि अनुष्ठान करवुं ते गरल अनुष्ठान छे. पर भवनां सुख भोगववानी इच्छाए करातुं स्तवनादि अनुष्ठान ते विषानुष्ठान छे बाह्य देखादेखीए गाडरिया प्रवाहे मिथ्यात्व बुद्धिथी जे स्तवनादि प्रवृत्ति करवुं ते अनोन्य अनुष्ठान छे. सम्यग् दृष्टिपूर्वक मोक्षनी इच्छाए बाह्य सर्व कामनाथी मुक्त निष्काम बनी मोक्षना हेतुए ज्ञानपूर्वक प्रभुनी स्तवना करवी ते तद्धेतु अनुष्ठान छे. समजण पडे तेवी भाषामां प्रभुनी स्तवना करवी. शब्दनो अर्थ समजीने विधिपूर्वक चढते भावे स्तवना करवी. स्तवन करतां आनंदरस प्रगटे ते अमृतानुष्ठानवाळुं प्रभु स्तवन जाणवुं. एवी रीते सर्व धार्मिक बाबतोमां अनुष्ठान स्वरूप जाणवुं. प्रभुना पर पूर्ण श्रद्धा प्रेम वधे अने स्तवन करतां आनंदरस भाव उल्लास वधे तेवी रीते स्तवन करवुं. एम करवाथी आत्मानी अत्यंत शुद्धि थाय छे अने ज्ञानानंदरूपे आत्म प्रभु प्राकट्य क्षणे क्षणे वधतुं जाय छे. एज हेतुए स्वपर आ-

स्मज्ञानानंद पर्याय विशुद्धिए देववंदन स्तुति स्तवन उद्‌गार रचना जाणवी अने आदरवी. सर्वज्ञ वीतराग देवनी आज्ञा विरुद्ध कंइ अजाणथी आ पुस्तकमां कंइ लखायुं होय तो तेनी प्रभु महावीर देवनी आगळ तथा संघनी आगळ क्षमा मागुं छुं, अने मिथ्या दुष्कृत दउछुं. सर्व विश्वने शांति मळो. सर्व जनोनी दोषदृष्टि टळो अने गुणदृष्टि खीलो.

इत्येवं ॐ अर्हंमहावीरशांतिः ३

आश्विन
पूर्णिमा.
सं. १९७८
मु० मेहसाणा.



निवेदन.

सेवा मंत्रो निशदिन गणी दुःखीना दुःख टाळुं,
सेवा तंत्रो निशदिन रची दुःख सहुना विदारुं;
सेवा यंत्रो प्रतिदिन करी स्वार्पणे नित्य राचुं,
मारुं तारुं सहु परिहरी सेवनामांज राचुं.

(कर्म योगमां श्रीमद् बुद्धिसागरजी सूरिजी) जेओ श्रीना हृदयमां प्रत्येक क्षणे विश्वना जीवोनी सेवा करवानो मंत्र रमी रह्यो छे. जेमनी नसो नसमां कोइपण भोगे विश्वना जीवोने प्रतिबोध अर्पीने शासनना रशिक बनावी स्वपरोन्नतिकर करवानी तीव्र जिज्ञासा प्रज्वल रही छे ते महात्मा शास्त्रविशारद् जैनाचार्य अध्यात्म ज्ञानी योगनिष्ठ बुद्धिसागरजी सूरीश्वरजीनुं संवत् १९७७ नी सालनुं चातुर्मास श्री संघना घणाज आग्रहथी श्री साणंद (सानंद) मां थयुं हतुं, त्यारे गुरु महाराज श्रीनी शारीरिक प्रकृति सारी न होवा छतां पण केटलाएक श्रावकोनी विनंतीथी जन समाजना कल्याणार्थे चउमासी देव वंदन स्तुति स्तवन संग्रहनो अति उपयोगी ग्रंथ पोतानी विश्वोपकारक प्रभावशाळी कसाएली लेखीनीद्वारा रच्यो हतो. जे वांचकोना सद्भाग्ये श्रीमद् बुद्धिसागरजी ग्रंथमाळाना ओगणसाठमा मणकारुपे जनसमाज पासे रजु थाय छे. आ ग्रंथनी अंदरना चैत्यवंदनो, स्तुति, स्तवनो आत्म ज्ञानथी भरपूर छे, मध्यस्थभावे अवलोकतां सहेजे तेनी अंदरना विषयोनुं भान करावनारा

छे. समयानुकूलरागो अने जमानाने अनुसरीने आ ग्रंथ रचवामां गुरु महाराजश्रीए घणीज प्रशंसनीय प्रवृत्ति सेवेली छे. ए स्पष्टज छे. आ ग्रंथनी अंदर ॐ ए मथाळावाला चैत्यवंदनो अने ॐ महा-वीर प्रभुए संज्ञावाळा स्तोत्रो वगेरे जे छे. ते जगत्‌ना जीवोने बाह्य रोग अने अनेक जातना विघ्नो विनाश करवामां सहायभूत छे अने आत्माना गुणो प्रगट करवामां आवता विघ्नो नाश करवामां खरेखर उपयोगी छे पण तेनुं चिंतवन शुद्ध प्रेम भावथी करनारज फळ पामी शके छे. आ ग्रंथनी अंदरना विषयो आत्माना ज्ञानदर्शन चारित्रादि गुणोनी वृद्धि करनारा छे. आ ग्रंथ क्रियाना अभिलाषी जीवोने सत्य शुद्ध क्रियाना मार्गे लइ जवामां दीपक समान अने तेनी साथे अध्यात्मामृतनुं पान करावनारो छे. अत्यारे जैनसमाजमां अध्यात्म ज्ञाननी अत्यंत आवश्यकता छे. अध्यात्म ज्ञान विनानुं जीवन खरा आत्मिक गुणोने प्रगटावी शकतुं नथी. आत्मज्ञान साथे जे शुद्ध क्रिया करवामां आवे छे. तेज खरेखर इच्छित सुखने अर्पनार छे. तेओश्रीए अभिनंदन प्रभुना चैत्यवंदनमां कह्युं छे के "प्रभु गुण वरवा भक्ति छे, साध्य एज मन धरवुं. घटाटोपशो गुणविना, गुण प्राप्तिमां मरवुं" हमारुं साध्य बिंदु प्रभुना गुण वरवामां याने प्राप्त करवामांज छे, अने ते माटेज हमारुं जीवन छे. बाकी घटाटोप गुणविनानो नकामो छे. बाह्यक्रियायोगे अंतरना गुणोने प्रदीप्त करवा एज मनुष्य जीवनमां सारभूत छे. आ ग्रंथनी अंद-रना स्तवनो, चैत्यवंदनो, स्तुतिओ विचारणीय, मनन करवा

योग्य छे, दुर्गुणोने टाळी सद्गुणोने आदवामां खरेखर आ ग्रंथ घणोज उपयोगी छे. समय पचास वर्ष पछात होय छे. सत्पुरुषोनी हयातीमां जे किंमत थाय छे. तेनाथी घणीज अधिक पचास वर्षे किंमत अंकाय छे अने ज्यारे भविष्यमां तेमना रचेला ग्रंथो जोवाशे अने भविष्यनी दुनियाना मनुष्योने तेमणे कया स्थाने बेशी अपूर्व भावो प्रकटावी आत्म गुणो प्रकट करावनारा ग्रंथो रच्या छे. ते ज्यारे मालूम पडशे त्यारे ऊच्चकोटीना सत्पुरुषो ते विचारी तेमना भावोने प्रेमथी झीली आत्मगुणो प्रकटाववा प्रयत्नशील बनशे. आ ग्रंथमां द्रव्यानुयोगना विषयथी अलंकृत चोवीश प्रभुना स्तवनोनी बे चोवीशीओ दाखल करवामां आवी छे. जे अगाउ श्री जैनोदय बुद्धिसागर समाज तरफथी प्रकट करवामां आवी हती ते बे चोवीशीओ ग्रंथमां दाखल करवामां आवी छे जे तत्वरुचि जीवोने घणीज उपयोगी अने विचारणीय छे जे मनन करवाथी समजाशे. एकंदरे आ ग्रंथ, सन्मार्गे प्रयाण करवामां साहायक छे. अ.नी अंदरना विषयो केवा सरळ अने भावथी भरपूर अने अध्यात्म ज्ञानरसथी अलंकृत छे जे आ ग्रंथना वांचकोने सहेजे समजी शकाशे. सज्जनो हंस चंचुवत् सार ग्रहण करशे. दुर्जनो पयमांथी पण पूरा शोधी काढी काकवृत्ति धारण करशे. सज्जनवृत्ति धारण करी गुणग्राही बनवानीज हमारी दरेकने भलामण छे.

छेवटे निवेदनना अंतमां वाचको प्रत्ये थयेल भूलनी क्षमा इच्छुंछुं अने आ ग्रंथना प्रकटार्थे जे बंधुओए पोतानी लक्ष्मीनो सदु-

पयोग करी सद्ज्ञानमां सहाय आपी छे तेमनो अंतःकरणपूर्वक आभार मानवामां आवे छे. थोडाज समयमां गुरुमहाराज श्री रचित पूजासंग्रहनो अति उपयोगी ग्रंथ व्यवहार अने निश्चयनयथी विभूषित अने अध्यात्म ज्ञान रसमय विधिपूजा संग्रहनो ग्रंथ बहार पडशे. ॐ श्री गुरुशांति.

पवित्र पर्युसणपर्व
श्रावण कृष्णपक्ष
एकादशी अढाइधर
संवत १९७८

लि. सद्गुरु चरणोपासक अने
श्री संघनो सेवक
आतमाराम खेमचंद

कापडीआ. साणंद



धन्यवाद.

निवेदनमां जणाव्या मुजब आ उपयोगी ग्रंथना प्रकटार्थे गुरु-महाराजश्री शास्त्रविशारद जैनाचार्य योगनिष्ठ बुद्धिसागरजी सूरीश्वरजी ज्यारे संवत १९७७ नुं चातुर्मास श्री साणंदमां बीराजता हता त्यारे नीचे जणावेल बंधुओ तरफथी द्रव्य सहाय मळी हती जे माटे आपनार अपावनार अने अपाववानी अनुमोदना करनार सर्वेनी धन्यवाद पूर्वक नोंध लेवामां आवे छे सद्ज्ञानना प्रकटार्थे खर्चेल द्रव्य सर्वे करतां अति उत्तम अने प्रशंसनीय छे अने तेनुं फळ अनहद छे ते दानवीरो जाणे छे. भविष्यमां आवा अनेक ग्रंथो प्रकट करवामां सहायक बनो एम अंतःकरणनी उंडी लागणी साथे विरमुं छुं.

१००) मेता. रायचंदभाइ रवचंदभाइ पोताना सद्गत पुत्र त्रिभुवनना स्मरणार्थे. साणंद.

५०) शा. मगनलाल नथुभाइना स्मरणार्थे हा. रायचंदभाइ रवचंदभाइ. साणंद.

५०) एक सद्गृहस्थ तरफथी. साणंद.

२५॥ चत्रभाण देवजी. गाम खीवांणदी.

५०) मेता. गफुलभाइ सांकलचंदना पत्नी वालीए आप्या. साणंद.

५०) शेठ. छगनलाल गीगाभाइ. साणंद.
२५) मेहता. अमरतलाल सांकलचंद. साणंद.

३५०–८–०

उपर प्रमाणे जे जे भाइओए आ मदद अपाववा सहाय आपी छे ते सर्वेनो अंतःकरणथी आभार मानवमां आवे छे.

श्री अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मंडल,



देववंदन स्तुतिस्तवन संग्रहनुं

अशुद्धि शुद्धि पत्रक.

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्धि.	शुद्धि.
२४	६	तीर्थकर.	तीर्थंकर.
२९	१०	हठावा.	हठावो.
४४	१०	आविर्भाव-	आविर्भावे.
५७	१५	तेमना.	नेमिना
७७	३	जीने-	जिने
७९	१५	भदथी-	भेदथी.
८१	४	हरखो,	हरख्यो
८१	६	परखो.	परख्यो.
१०४	६	बुद्धि.	बुद्धि
१०६	६	माहना-	मोहना.
११५	१३	प्रदश-	प्रदेश.
१४५	१२	व्रासो-	वासो.



विषयानुक्रमणिका.

जिनेश्वर स्तवन चतुर्विंशतिका.

जिनेश्वर स्तवन चतुर्विंशतिका.



श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी ग्रन्थमाळामां

प्रगट थयेला ग्रन्थो.



ग्रथांक		पृष्ठ	किंमत.
१	क. भजन संग्रह भाग १ लो.	२००	०–८–०
* १	अध्यात्म व्याख्यानमाळा.	२०६	०–४–०
* २	भजनसंग्रह भाग २ जो.	३३६	०–८–०
* ३	भजनसंग्रह भाग ३ जो.	२१५	०–८–०
* ४	समाधि शतकम्	३४०	०–८–०
* ५	अनुभव पच्चिशी,	२४८	०–८–०
६	आत्मप्रदीप.	३१५	०–८–०
* ७	भजनसंग्रह भाग ४ थो.	३०४	०–८–०
८	परमात्मदर्शन.	४३२	०·१२·०
* ९	परमात्मज्योति.	५००	०·१२·०
* १०	तत्त्वबिंदु.	२३०	०–४–०
* ११	गुणानुराग. [आवृत्ति बीजी]	२४	०–१–०

*	१२-१३. भजनसंग्रह भाग ५ मो तथा ज्ञानदीपिका.	१९०	०-६-०
*	१४ तीर्थयात्रानुं विमान [आ. बीजी]	६४	०-२-०
*	१५ अध्यात्म भजनसंग्रह	१९०	०-६-०
*	१६ गुरुबोध.	१७२	०-४-०
*	१७ तत्त्वज्ञानदीपिका	१२४	०-६-०
	१८ गहुलीसंग्रह भा. १	११२	०-३-०
*	१९-२० श्रावकधर्मस्वरूप भाग १-२ [आवृत्ति त्रीजी]	४०-४०	-१-०
*	२१ भजन पद संग्रह भाग ६ ठो.	२०८	०-१२-०
	२४ वचनामृत.	३०८	०-१४-०
	२३ योगदीपक.	२६८	०-१४-०
	२४ जैन ऐतिहासिक रासमाळा.	४०८	१-०-०
*	२५ आनन्दघन पदसंग्रह भावार्थ सहित.	८०८	२-०-०
*	२६ अध्यात्म शान्ति [आवृत्ति बीजी]	१३२	०-३-०
*	२७ काव्यसंग्रह भाग ७ मो.	१५६	०-८-०
*	२८ जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति.	९६	०-२-०
*	२९ कुमारपाल चरित्र (हिंदी)	१८७	०-६-०

३० थी ३४ सुखसागर गुरुगीता.	२००	०—४—०
३५ षड्द्रव्य विचार.	२४०	०—४—०
* ३६ विजापुर वृत्तांत.	९०	०—४—०
३७ साबरमती काव्य.	१९६	०—६—०
३८ प्रतिज्ञा पालन.	११०	०—५—०
३९—४०—४१ जैनगच्छमत प्रबंध संघप्रगति जैनगीता.		१—०—०
४२ जैन धातुप्रतिमा लेख संग्रह		१--०--०
४३ मित्रमैत्री.		०—८—०
४४ शिष्योपनिषद्.		०—२—०
४५ जैनोपनिषद्.	४८	०—२—०
४६—४७ धार्मिक गद्यसंग्रह तथा सदुपदेश भाग १ लो.	९७६	३—०—०
४८ भजन संग्रह भा. ८	९७६	३—०—०
४९ श्रीमद् देवचंद्र भा. १	१०२८	२—०—०
५० कर्म योग.	१०१२	३—०—०
५१ आत्मतत्त्व दर्शन	११२	०-१०-०
५२ भारत सहकार शिक्षण काव्यं	१६८	०-१०-०

५३	श्रीमद् देवचंद्र भा २	१२००	३-८-०
५४	गहुली संग्रह भा. २	१३०	०-४-०
५५	कर्मप्रकृतिटीकाभाषांतर	८००	३-०-०
५६	गुरुगीत गुहलीसंग्रह	१९०	०-१२-०
५७-५८	आगमसार अने अध्यात्म गीता	४७०	०-६-०
५९	देववंदन स्तुति स्तवन संग्रह.	१७५	०-४-०

* आ नीशानीवाळा ग्रंथो सीलकमां नथी.

उपरनां पुस्तको मळवानु ठेकाणुं.

वकील मोहनलाल हीमचंद.

(गुजरात) पादरा.

देववंदन स्तवन स्तुति संग्रह.

चतुर्मासी देववंदन विधि.

स्थापनाचार्यादि आगळ इरियावहियादि करी, काउसग्ग करी उपर लोगस्स कहीने प्रथम मंगल-निमित्त चैत्यवंदन कहेवुं. पछो नमुथ्थुणं पछी जय वीअराय आभवमखंडा सुधी कही खमासमण देइ ऋषभदेवनुं चैत्यवंदन कहेवुं पछी नमुथ्थुणं कही चारे थोये देव वांदवा. पछी नमुथ्थुणं कही जय-वीअराय अर्धा कही खमासमण देइ अजितादि देवनां चैत्यवंदनो तथा थोयो कहेवी. श्री शांतिनाथनुं चैत्यवंदन करी चारे थोये देव वांदी स्तवन कहेवुं. बाकीना तीर्थंकरने अेक चैत्यवंदन अने एक स्तुतिथी वांदवा. श्री नेमिनाथ श्री, पार्श्व नाथ अने श्री महावीर प्रभुने चार थोयो स्तवनथी वांदवा. महावीरप्रभुनुं स्तवन कही पछी जयवीअ-राय आखा कहेवा पछी श्री शाश्वता अशाश्वता

प्रभुनुं चैत्यवंदन करवुं अने नमुथ्थुणं अरिहंत चेइआणं आदिकथी चारे थोयो साथे कहेवी. पछी काउसग्गमां एक जणे काउसग्ग पारी मोटी शांति कहेवी. पछी काउसग्ग पारी लोगस्स कही तेर नवकार गणवा. सिद्धाचलनां तेर खमासमणां देवां पछीथी सिद्धाचल, गिरनार, आबु, अष्टापद अने सम्मेत शिखरनां स्तवन कही अविधि आशातनानो मिच्छामि दुक्कडं देवो. विधि समाप्त.

अथ चौमासी देववंदन प्रारंभ.

चैत्यवंदन.

पानसरा महावीर जिन, वंदुपूजुं भावे;
चौमासी चोवीश जिन, वंदु गुणगणदावे. १
ऋषभादिक चोवीश देव, वंदीए हितकारी;
आतमशुद्धि संपजे, मुक्ति मळे सुखकारी. २
अतीत अनागत कालना ए, वंदो सर्व जिनेश;
बुद्धिसागर संप्रति, जिनवर भाव विशेष. ३

एम चैत्यवंदन करी नमुथ्थुणं कही आजवम-

खंमा सुधी जयवीअराय कहेवा. पछीथी श्री आदि-नाथनुं चैत्यवंदन करवुं. पछी श्री पद्मविजयजी वगेरेनी चौमासी देववंदननी विधि प्रमाणे देववंदन विधि जाणवी.

चातुर्मासी देववंदन.

ऋषभदेव चैत्यवंदन.

आदिनाथ अरिहंत जिन, ऋषभदेव जयकारी.
संघ चतुर्विध तीर्थने, स्थाप्युं जग सुख कारी. १
परमेश्वर परमातमा, तनुयोगे साकार;
अष्ट कर्म दूरे कर्या, निराकार निर्धार. २
साकारी अरिहंतजी ए, निराकारथी सिद्ध;
बुद्धिसागर ध्यावतां, प्रगटे आतम ऋद्धि. ३

ऋषभ जिन स्तवन.

(कानुडो न जाणे मोरी प्रीति ए राग.)

प्रभुजी ऋषभजिनेश्वरदेव,हृदयमां व्हाला लाग्यारे.प्रभु.
आविर्भावे दिल प्रगटो, कर्म आवरणो विघटो.
प्रभुजी लाग्युं तुजथी तान,आत्मिकभावे जाग्यारे.प्रभु. १

मोहनो पम्दो दूरे, थातां शुद्धातम स्फूरे
पछी रहे न किंचित् नेद, कर्म सहु जावे नाग्यांरे. प्रभु. २
काची बे घमीमां मळवुं, ज्योतिमां ज्योते नळवुं.
एवुं अनुनव निश्चयनान, जीत नगारां वाग्यांरे. प्रभु. ३
शुद्धोपयोगे संगी, अंतरथातो रंगी.
बुद्धिसागर प्रभु हजूर, मल्या नहि मागे माग्यारे प्रभु. ४

स्तुति.

ऋषभजिनेश्वर समनिज आतम, सत्ताए छे ध्यावनो
तिरोनावने दूर करीने, व्यक्तिनावे लावनो.
आतमने परमातम करवा, असंख्य योगो निन्न छे.
सम उपयोगे सर्वे मळतां, सापेक्षाथी अनिन्न छे. १
निन्न निन्न मत दर्शन पंथो, निरपेक्षे मिथ्या सदा
सातनयोनी सापेक्षाए, जाणे सम्यक्त्व ज तदा
जैन धर्ममां सर्वे धर्मो, सापेक्षे समाय छे.
जैनधर्म सेवे सहुधर्मो सेव्या देवो गाय छे. २
जिनवाणी जाणंतां जाण्युं सर्वे ए निश्चय खरो.
जग जाण्युं सहु आतम जाणे एवा निश्चयने धरो.

आतमशुद्धि माटे सर्वे बाह्यांतर उपाय छे.
जेने जेथी शुद्धि थाती तेने तेज सुहाय छे. ३
बहिरातमने अंतरआतम करवो आतम ज्ञानथी.
अंतरआतमने परमातम करवो ध्यानना तानथी.
अंतरआतमते परमातम जाणी प्रभुने सेवता.
तेवा जैनो जिनता पामे स्हाय करंता देवता. ४

॥ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

अजित अजित पद आपता भव्यजीवने जेह.
पुरुषार्थने भाखता हेतु मुख्य छे तेह. १
जडपरिणामीयत्नथी जगसाथे छे बन्ध
शुद्धात्मिक परिणामना पुरुषार्थे नहि बन्ध. २
पुरुषार्थ शिरोमणी ए सहजयोग शिरदार.
शुद्धातम उपयोग छे अजित थवा निर्धार. ३

आजित जिन स्तुति.

अजितजिनेन्द्रे अजित थवाने सम्यग्ज्ञान प्रकाश्युंजी.
सापेक्षाए भव्यलोकना मनमां प्रेमे वास्युंजी.
आत्मज्ञान सम ज्ञान नहींको क्षणमां थावे मुक्तिजी.
आतमज्ञानी निर्लेपीथै कर्म करे सहु युक्तिथी. १

संभवनाथ चैत्यवंदन.

संभवजिनने सेवतां संभवती निज ऋद्धि.
क्षायिक नव लब्धि मळे थतो आतमनी शुद्धि. १
घाती कर्मना नाशथी अर्हन् पदवी पाम्या.
आधि व्याधि उपाधिने तुज ध्यानारा वाम्या. २
आतमा ते परमातमा ए व्यक्तिभावे करवा.
संभवजिन उपयोगथी क्षण क्षण दिलमां स्मरवा. ३

संभवजिन स्तुति.

आत्म स्वभावे संभववुं ते संभव जिननी सेवाजी.
गुणपर्यायो आविर्भावे थातां पोते देवाजी.
अभेदभावे संभव करता ज्ञानानंद स्वभावेजी.
निजआतम संभवरूपी छे व्यक्त करे भवी भावेजी. १

अभिनंदन चैत्यवंदन.

बाह्यांतर अतिशय गुणी अभिनंदन जिनराज.
प्रभु गुण गणने पामवा अंतरमां बहु दाझ. १
प्रभु गुण वरवा भक्ति छे साध्य एज मन धरवुं.
घटाटोप शो गुणविना गुण प्राप्तिमां मरवुं. २

प्रभुगुण पोतामां छताए आविर्भावने काजे.
अभिनंदनने वंदतां प्रकट गुणो थै छाजे.

श्री अभिनंदन स्तुति.

आत्मानंद प्रगट करी अभिनंदे जेह,
अभिनंदन छे आतमा गुणपर्याय गेह;
आतम अभिनंदन थतो अभिनंदन ध्याइ,
ध्यान समाधि एकता लीनता पद पाइ. १

सुमतिनाथ चैत्यवंदन.

सुमतिनाथ पंचम प्रभु सुमतिना दातार,
सर्व विश्वनायक विभु अरिहंत अवतार. १
सात्विक गुणनी शक्तिथी बाह्य प्रभुता धारी,
चिदानंद प्रभुता नली आंतर नित्य छे प्यारी. २
तुजमां मनने धारीने ए निःसंगी थानार,
कर्म करे पण नहीं करे तुज भक्तो नरनार. ३

सुमतिनाथ स्तुतिः

सन्मति धारे दुर्मति, त्यागी जे नरनारी,
सुमति प्रभु भक्तो खरा, नीतिरीतिधारी;

सुमति ग्रही शुद्ध ज्ञावथी, आत्मभावे रमंता,
निश्चयनय सुमति प्रभु, आपोआप नमंता. १

पद्मप्रभु चैत्यवंदन.

नवधाभक्तिथी खरी, पद्मप्रभुनी सेवा,
सेवामां मेवा रह्या, आप बने जिनदेवा. १
नवधाभक्तिमां प्रभु, प्रगटपणे परखाता,
आठ कर्म पडदा हठे स्वयं प्रभु समजाता. २
पद्मप्रभुने ध्यावतां ए पूर्ण समाधि थाय,
हृदय पद्ममां प्रकटता आत्म प्रभुजी जणाय. ३

पद्मप्रभु स्तुति.

पद्मप्रभुने देखतां देखवानुं न बाकी,
पद्मप्रभुने ध्यावतां बने आतम साखी;
पद्मप्रभुमय थइ जतां, कोइ कर्म न लागे,
देह छतां मुक्ति मळे, जीत डंको वागे. १

सुपार्श्वनाथ चैत्यवंदन.

सुपार्श्वनाथ छे सातमा, तीर्थंकर जिनराजा,
पासे प्रभु सुपार्श्व तो, आतम जगनो राजा. १

आतममां प्रभु पास छे बाहिर मूर्खा शोधे,
अंतरमां प्रभु ध्यानथी ज्ञानी भक्तो बोधे. २
द्रव्यभावथी वंदीए ए ध्याइजे प्रभु पास,
एकवार पाम्या पछी टळे नहीं विश्वास. ३

सुपार्श्वनाथ स्तुति.

शुद्ध प्रेम ने ज्ञानथी, सुपार्श्वने ध्यावो,
जडमां सुख क्यारे नहीं, एवो निश्चय लावो;
प्रभु पासे नहीं आंतरुं, एवुं जेने भासे,
जैन मटी जिन ते बनी, पूर्णानंदे विलासे. १

चंद्रप्रभु चैत्यवंदन.

अनंत चंद्रनी ज्योतिथी, अनंत ज्ञाननी ज्योत,
चंद्र प्रभु प्रणमुं स्तवुं, करता जग उद्योत. १
असंख्य चंद्रो भानुओ, इन्द्रो जेने ध्याय,
परब्रह्म चंद्र प्रभु, जगमां सत्य सुहाय. २
शुद्ध प्रेमथी वंदतां ए असंख्य चंद्रनो नाथ,
बुद्धिसागर आतमा, टाळे पुद्गल साथ. ३

चंद्रप्रभुनी स्तुति.

चंद्रप्रभु विभु उपदिशे, जैन धर्म ते साचो,
नय सापेक्षाए खरो तेमां भव्यो राचो;
आत्मज्ञानने ध्यानथी करो आत्मनी शुद्धि,
शुद्धातम चंद्रप्रभु थातां आनंद ऋद्धि. १

श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन.

सुविधिनाथ सुविधि दिये आत्मशुद्धिना हेत,
श्रावक साधु धर्म बे तेना सहु संकेत. १
द्रव्यभाव व्यवहार ने निश्चय सुविधि बेश,
जैन धर्मनी जाणतां करतां रहे न क्लेश. २
शुद्धातम परिणाममां ए, सर्व सुविधि समाय,
आतम सुविधिनाथ थै, चिदानंदमय थाय. ३

श्री सुविधि स्तुति.

आत्मिक शुद्धिनी सुविधि, द्रव्यभावथी साची,
बाह्यांतर किरिया भली, स्वाधिकारे राची;
करतां चिदानंद परिणति, एज सुविधि सोहे,
त्रण जगत्ना लोकनां, मन सुविधि मोहे. १

शीतलनाथ चैत्यवंदन.

आत्मिक धर्मनी शुद्धता करीने शीतलनाथ,
सर्व लोक शीतल करो साचा शिवपुर साथ. १
धर्म सुविधि आदरी शीतल थया जिनंद,
समताथी शीतल प्रभु आतम स्वयं महेन्द्र. २
समता शीतलताथकी ए शीतल प्रभु थवाय,
बुद्धिसागर आतमा पूर्णानंद सुहाय. ३

शीतलप्रभु स्तुति.

शीतल प्रभु शीतल करे जजे शीतलभावे,
शम शीतलता धारतां सहु संताप जावे;
रागद्वेष निवारीने आप शीतल थावो,
आतमने शीतल करो सत्य निश्चय लावो. १

श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन.

सर्व भाव श्रेयो वर्या, श्री श्रेयांस जिनंद,
आत्मशीतलता धारीने, टाळ्या मोहना फंद. १
उपशम क्षयोपशम अने क्षायिक भावे जेह,
सत्य श्रेयने पामतो स्वयं श्रेयांस ज तेह. २

श्री श्रेयांस प्रभुसमो ए, निज आतमने करवा,
वंदो ध्यावो जविजना, धरो न जडनी परवा. ३

श्री श्रेयांस स्तुति.

द्रव्य जावथी श्रेयने, निज आत्मनुं जाणो,
जाणी आचारे मूकशो, पुरुषार्थने आणो;
आत्मज्ञान ने सत्क्रिया, वरू श्रेयने साधो,
श्रेयांस प्रभुनी पेठ सहु, पूर्ण श्रेयेज वाधो. १

श्री वासुपूज्य चैत्यवंदन.

क्षायिक लब्धि श्रेयथी वासुपूज्य जिनदेव,
थया हृदयमां जाणीने करो प्रभुनी सेव. १
चिदानंद वसुतावर्या विश्वपूज्य जिनराज,
वासुपूज्य निज आतमा करशो साधी काज. २
प्रभुमय थै प्रभु सेवतां ए स्वयं प्रभु जिन थाय,
अनंत केवलज्ञाननी ज्योति ज्योत सुहाय. ३

श्री वासुपूज्य स्तुति.

आतम वासु पूज्य छे करो आविर्जावे,
निश्चय नय दृष्टि बळे ब्रह्म जावना दावे;

वासु पूज्यना ध्यानथी वासु पूज्यजी थावो,
ध्यान समाधि एकता लीनताथी सुहावो. १

विमलनाथ चैत्यवंदन.

आत्मिक सिद्धि आठ जे आठ वसुना भोगी,
आत्म वसु प्रगटावीने निर्मल थया अयोगी. १
करी विमल निज आतमा थया विमल जिनराज;
प्रभु पेठे निज विमलता करवी ए छे काज. २
आत्म विमलता जे करे ए स्वयं विमल ते थाय;
विमल प्रभु आलंबने विमलपणुं प्रगटाय. ३

विमल स्तुति.

आर्तरौद्रने वारीने मन निर्मल करवुं,
एवी प्रभुनी पूजना एह ध्यान छे धरवुं;
विमल प्रभु जग उपदिशे सहु निर्मल थावो,
विमल थवुं निज हाथमां शाने वार लगावो.

अनंतनाथ चैत्यवंदन.

विमलात्मा करीने प्रभु थया अनंत जिनेश,
अनंत ज्योतिर्मय विभु नहीं रागने द्वेष. १

अनंत जीवन ज्ञानमय आनंद सहज स्वभावे;
द्रव्य क्षेत्रने कालथी भावथी सत्य सुहावे. २
अनंत रत्नत्रयी वर्या ए अनंत जिनवर देव;
बुद्धिसागर भावथी करवी भक्ति सेव. ३

अनंतनाथ स्तुति.

अनंत आतम द्रव्यथी, क्षेत्र कालने भावे,
जाणे अंत न थाय छे आठ कर्म अभावे;
द्रव्य क्षेत्रकाल भावथी अंत कर्मनो आवे,
अनंतनाथ जणावता ब्रह्म अंत न थावे. १

धर्मनाथ चैत्यवंदन.

पन्नरमा श्री धर्मनाथ वंदु हर्षोल्लासे;
अनंत आतम भाखियो केवलज्ञान प्रकाशे. १
आत्म धर्म छे आत्ममां जडमां जडना धर्मो;
वस्तु स्वभावे धर्म छे समजी टाळो कर्मो. २
चिदानंद धर्मज खरो ए धर्म न ते जडमांह्ये;
आत्मावण जड विषयमां मळे न आनंद क्यांये, ३

धर्मनाथ स्तुति.

धर्म प्रभु कहे आत्मनो धर्म गुण पर्यायो,
समजे वर्ते सहजथी तेह धर्मी सुहायो;
धर्मनाथ निज आतमा करे आविर्भावे;
अज्ञानी धर्म पन्थ सहु टळे आत्म स्वभावे. १

शांतिनाथ चैत्यवंदन.

दर्शन ज्ञान चारित्रथी साची शांति थावे;
शांतिनाथ शांतिवर्या रत्नत्रयी स्वभावे. १
तिरोभाव निज शांतिनो आविर्भाव जे थाय;
शुद्धातम शांति प्रभु स्वयं मुक्तिपद पाय. २
बाह्य शांतिनो अंत छे ए आतम शांति अनंत;
अनुभवे जे आत्ममां प्रभुपद पामे संत. ३

॥ शांतिनाथ स्तवन ॥

समकित द्वार गभारे पेसतांजी—ए राग.
शांति जिनेश्वर परमेश्वर विभुजी,
गातां ने ध्यातां हर्ष अपाररे;

शांति स्मरंतां प्रगटे शांतताजी,
सहज योगे निर्धाररे. शांति० १
मनमां छे मोह ज तावत् दुःख छे जो,
मोह टळयाथी साची शांतिरे;
तमने रजथी नहीं शांति आत्मनीजी,
सात्त्विक शांति छेवटे शांतिरे. शांति० २
देहने मनमां शांति नहीं खरीजी,
शांति न बाहिर भोगे थायरे;
यावत् मनमां संकल्पो जागताजी,
तावत् न शांति सत्य सुहायरे. शांति० ३
शांति अनुभव आवे समपणेजी,
उपशम आदि क्षायिक भावरे;
सहज स्वभावे विकल्पो टळेजी,
शांति अनंती आतम दावरे. शांति० ४
द्रव्ये ने भावथी शांति पामवाजी,
ज्ञाने लगावो आतमतान रे;
शांति प्रभुमय आतम थै रहेजी,
बुद्धिसागर भगवान्रे. शांति० ५

शांतिनाथ स्तुति चार.

शांति मळे नहीं लक्ष्मीथी नहीं राज्यना जोगे,
शांति मळे नहीं कामथी बाह्य सत्ता प्रयोगे:
शांति न राग द्वेषथी सहु विषयने बामे;
शांति जिनेश्वर जाणता शांति आतम ठामे. १
शांति न क्रोधने मानथी तेम मायाने लोभे;
शांति न शास्त्राभ्यासथी जरूमां मन थोभे,
शांति न बाह्य पदार्थथी हुं ने मारुं माने;
सर्व जिनेश्वर जाणता शांति आतम स्थाने. २
संकल्पोने विकल्पथी मन शांत न थावे,
अज्ञानने मोह भावथी कोइ शांति न पावे;
नामरुप निर्मोहथी जिनवाणी जणावे,
शांति आतममां खरी अनुभवथी आवे. ३
मनने मारतां आत्ममां सत्य शांति स्वभावे,
मन संसारने मुक्ति छे समजे शिव थावे;
आतममां मन ठारतां निजपास छे शांति;
शासन देवी सहायथी रहे नहि कोइ भ्रान्ति. ४

कुंथुनाथ चैत्यवंदन.

शुद्ध स्वभावे शांतिने, पाम्या कुंथु जिनंद,
कुंथुनाथ निज आतमा, समजे नहि मतिमन्द. १
मननी गति कुंठित थतां, वैकुंठ मुक्ति पासे;
क्रोधादिक दूरे करी, वर्ते हर्षोल्लासे.
बाहिर दृष्टि त्यागथी, आतम दृष्टि योगे;
कुंथुनाथ ध्यावो सदा, निजना निज उपयोगे. ३

कुंथुनाथनी स्तुति.

कुंथुनाथमय थै ने जाण्यो, कुंथुनाथ आराधोजी,
आतमरूपे थैने आतम, सिद्धि पदने साधोजी;
आसक्तिवण कर्मो करतां, आतम नहीं बंधायजी,
करे क्रिया पण अक्रिय पोते, उपयोगे प्रभु थायजी.

अरनाथ चैत्यवंदन.

राग द्वेषारिहणी, थया अरिहंत जेह;
अर जिनेश्वर वंदतां, कर्म रहे नहीं रेह. १
आतमना उपयोगथी, रागद्वेष न होय;
सर्व कार्य करतां थकां, कर्म बंध नहीं जोय. २

आत्म ज्ञान प्रकाशथी ए, मिथ्या तम पलटाय;
बुद्धिसागर आत्ममां, सहु शक्ति प्रगटाय. ३

अरनाथ स्तुति.

कर्म करो पण कर्मथी, रहो निर्लेप भव्यो,
जिन थातां परमार्थनां, थातां कर्तव्यो;
जैन दशामां कर्मने, करो स्वाधिकारे,
अर जिनवर एम भाखता शक्ति प्रगटे छे त्यारे, १

मल्लिनाथ चैत्यवंदन.

मल्ल बनी भवरणविषे, जीत्या रागने द्वेष;
मल्लि प्रभु तेथी थया, टाळ्या सर्वे क्लेश. १
रागद्वेष न जेहने, परमातम ते जाण,
देह छतां वैदेही ते, केवली छे भगवान्. २
मल्लिनाथ प्रभु ध्याइने ए, भाव मल्लता पामी;
कर्म करो प्रारब्धथी, बनी अंतर निष्कामी. ३

मल्लिनाथ स्तुति.

मल्लिनाथ घट जेहना, सर्व मल्लने जीते,
आतम मल्ल जे जाणतो, शुद्ध धर्म प्रतीते;

हारे न जगमां कोइथी, कोइ तेने न मारे,
मोह शत्रुने मारतो, तेने देव छे व्हारे. १

मुनिसुव्रत चैत्यवंदन.

भाव मुनि सुव्रतपणुं, प्रगटावीने जेह;
मुनि सुव्रत प्रभु जिन थया, वंदु ते गुणगेह. १
क्षायिकभावे आतममां, क्षायिक लब्धि धारी;
मुनिसुव्रतने वंदतां, रहे न जडनी यारी. २
मुनिसुव्रतपणुं आतममां ए, जाणी पामो भव्य;
मुनिसुव्रत जिन उपदिशे, एवुं निज कर्तव्य. ३

मुनिसुव्रत स्तुति.

समकितने चारित्रथी, मुनिसुव्रत थावे,
घातीकर्म विनाशतां, प्रभुता घट पावे;
राजयोग चारित्रमां, शुद्ध उपयोग समता,
मन वच कायनी गुप्तिथी, परमात्म रमणता. १

नमिनाथ चैत्यवंदन.

आतममां प्रणमी प्रभु, थया नमि जिनराज;
नमवुं उपशम क्षायिके, क्षयोपशमे सुखकाज. १

नम्या न जे ते भव भम्या, नमी लह्या गुणवृंद;
नमि प्रभुए भाखियुं, सेवा छे सुख कंद. २
आतममां प्रणमी रही ए, स्वयं नमि घट जोवे;
ध्यान समाधि योगथी, आतम शक्ति नहि खोवे. ३

नमिनाथ स्तुति.

नमि जिनेश्वर सेवा भक्ति, जगनी सेवा भक्तिजी,
निज आतमनी सेवा भक्ति, एक स्वरुपे शक्तिजी;
नाम रुपथी भिन्न निजातम, धारी प्रभु जे ध्यावेजी,
प्रारब्धे छे कर्मनो भोगी, तोपण भोगी न थावेजी. १

श्री नेमिनाथ चैत्यवंदन.

बावीशमा श्री नेमिनाथ, घोर ब्रह्मव्रत धारी,
शक्ति अनंती जेहनी, त्रण भुवन सुखकारी. १
इन्द्र चंद्र नागेन्द्रने, वासुदेवो सर्वे;
चक्रवर्तियो नेमिने, सेवे रही अगर्वे. २
कृष्णादिक भक्तो घणा ए, जेनी सेवा सारे;
एवा परमेश्वर विभु, सेवंतां सुखभारे, ३

श्री नेमिनाथ स्तवन.

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए

जास सुगंधीरे काय—ए राग.

नेमि जिनेश्वर वंदीए,
ध्याइजे सुखकार;
द्रव्य कर्मने ज्ञाव कर्म जेणे हण्यां,
धर्म चक्री निर्धार. नेमि० १

चोत्रीश अतिशये शोभता,
बार गुणे गुणवंत;
वाणी गुण पांत्रीशना धारक जिनपति,
रुपारुपी भदंत. नेमि० २

वीश स्थानकमांही एकनुं,
आराधन करी बेश;
पूर्व ज्ञवे तीर्थंकर नामने बांधियुं,
टाळ्या सर्वे क्लेश. नेमि० ३

चउ निक्षेपे ध्यावतां,
सात नये करी ज्ञान;

निज आतम अरिहंतपणुं जल्दी वरे;
टाळी मोहनुं तान. नेमि० ४
तुज अनुभव जेणे कर्यो,
ते नहीं बांधे कर्म;
शाता अशाता भोगवे ते समभावथी;
वेदे आतम शर्म. नेमि० ५
तिरोभाव निज शक्तिनो,
आविर्भाव जे अंश;
ते अंशे मुक्तिने मुक्तता आत्ममां,
वर्ते ले सापेक्ष. नेमि० ६
ध्याता ध्येयने ध्याननना,
परिणामे छे अभेद;
बुद्धिसागर एकता प्रभुनी साथमां,
पाम्यो अनुभव एक. नेमि० ७

थोयो.

द्रव्य भावथी नेमि सरखा, बळिया जैनो थावेजी,
जैनधर्म प्रसरावे जगमां, शुभ परिणामना दावेजी;

शुभते धर्म प्रशस्य कषायो, करतां पुण्यने बांधेजी,
शुद्ध परिणामे वर्तंतां, मुक्ति क्षणमां साधेजी. १
शुभ परिणामी सम्यग् दृष्टि, शुद्ध भावने पामेजी,
अशुभ कषायो प्रगट्या वारे, देहाध्यासने वामेजी;
निर्भय निःसंगी बळीयो थै, कार्य करे नहि हारेजी,
तीर्थंकर सर्वे उपदेशे, प्रभुपणुं घट धारेजी. २
नाम रूपमां निर्मोही थै, प्रभुभक्तो शिव वरताजी,
सर्वकार्य करता अधिकारे, भयथी न गाठा पडताजी;
मर्दबनीने दर्द सहेसहु, धर्म कर्म व्यवहारेजी,
ज्ञान कर्मने भक्ति उपासन—योगने अंतर धारेजी. ३
मुक्ति भवमां समभावी थै, धर्म कर्म नहीं मूकेजी,
जीवन्मुक्त बने ह्रोये पण, कर्तव्यो नहीं चूकेजी,
देवगुरुने करीने स्वार्पण, जैनो जिन थै जाताजी,
शासन देवी सेवा सारे, धर्मनी सेवा च्हाताजी. ४

श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन.

पार्श्वनाथ पासे प्रभु, आत्म ज्ञानथी देखे;
जडवण आतम भानथी, प्रकट प्रभुनिज पेखे. १

जलधिमां तारो यथा, खेले स्वेच्छाभावे;
तथा ज्ञानी जड वस्तुमां, खेले ज्ञान स्वभावे. २
पंच वर्णनी माटीने, खाइ बने छे श्वेत;
शंखनी पेठे ज्ञानी बहु, निःसंगी संकेत. ३
देखे अज्ञानी बहिर, अंतर देखे ज्ञानी;
ज्ञानीना परिणामनी, साक्षी, केवल ज्ञानी. ४
ज्ञानीने सहु आस्रवो, संवररुप थाय;
संवरपण अज्ञानीने, आस्रव हेतु सुहाय. ५
पार्श्व प्रभुए उपादिश्यो ए, ज्ञान अज्ञाननो भेद;
बुद्धिसागर आत्ममां, ज्ञानीने नहीं खेद. ६

पार्श्वनाथ स्तवन.

आतम, पार्श्व प्रभुना प्रेमने
अंतर धारजो रे लोल०
प्रगटे जे जे कषायो चित्तमां,
तेहने वारजोरे लोल० आतम० १
प्रभुना जैन धर्ममां शंका,
आदि नहीं करोरे लोल०

गुरुने धर्मनी संघनी रक्षा,
माटे झट मरोरे लोल.　　　　　आतम० २
जगमां जैनो वधवा हेतके,
सहु स्वार्पण करोरे लोल०
साधर्मिक देखीने स्वार्पण,
प्रीति घट धरोरे लोल०　　　　　आतम० ३
जिनने जैननी सेवा भक्तिमां,
भेद न एकतारे लोल०
प्रभुजी संघनी सेवा ते तुज,
सेवा विवेकतारे लोल०　　　　　आतम० ४
सेवा भक्तिमां छे अभेद के,
प्रभुने भक्तमांरे लोल.
प्रभुजी एवो मुज विश्वास छे,
व्याप्यो रक्तमांरे लोल०　　　　　आतम० ५
प्रभुनी गुरुनी संघनी सेवा,
भक्ति एक छेरे लोल०
जैनमां जिनपणुं निरखातुं के,
स्वार्पण टेक छेरे लोल०　　　　　आतम० ६

सेवा भक्ति विना नहीं ज्ञानने,
कर्मयोगीपणुंरे लोल०
सेवा भक्तिथी दिल शुद्धिके,
निश्चय ए भणुंरे लोल० आतम० ७
भक्तोने प्रभु भावे सेवतां,
व्यक्त प्रभुपणुंरे लोल०
थातो योगी आतम देवके,
क्षणमां जिनपणुंरे लोल० आतम० ८
प्रभुजी तुं वंदे छे संघने,
ते छे मोटकोरे लोल०
प्रभुजी तेनी आगळ हुं तुं,
सौथी छोटकोरे लोल० आतम० ९
प्रभुजी जीवन्मुक्त थतां त्हें,
एम उपदेशियुंरे लोल०
प्रभुजी संघनी सेवा भक्तिमां,
मुजमन उल्लस्युंरे लोल० आतम० १०
प्रभुजी सेवा भक्तिना अंशथी,
सिद्धपणुं थतुंरे लोल०

प्रभुजी धर्म कर्म व्यवहारथी,
संघपणुं छतुं रे लोल० आतम० ११
केवल ज्ञानीने व्यवहारके,
करवानो खरो रे लोल०
तेथी तीर्थोन्नति छे शीख ए,
भक्तो दिल धरो रे लोल० आतम० १२
प्रभुजी तुजपर अणुसम प्रेमके,
जैनो उपरेरे लोल०
प्रभुजी धारे ते लहे मुक्तिके,
भवसागर तरेरे लोल० आतम० १३
संघनी द्रव्यने भावथी उन्नति,
हेतु मुज सहुरे लोल०
स्वार्पण कीधुं एमां ताह्यरी,
भक्ति सहु लहुरे लोल० आतम० १४
संघनी भक्तिमां नहि दोषनी,
दृष्टि भक्तनेरे लोल०
प्रभुजी बुद्धिसागर भक्तमां,
धन्य छे रक्तनेरे लोल० आतम० १५

पार्श्व प्रभु स्तुति.

पार्श्व प्रभु बोले जग लोको,
मोह थतो मनमांथी रोको:
पाडो नहि दुःख पडतां पोको,
उद्यमथी पग ठोको.
जैन धर्म जगमां प्रसरावो
संघ भक्ति आचारे लावो
मानव भवनो लेशो ल्हावो
निश्चय एवो लावो
जैन धर्म शत्रुओ हठावो
संघनी रक्षामां लय लावो
तन मन धनतो जोग धरावो,
निश्चय मुक्ति पावो.
जैनोमां जिनमां नहीं भेद
भक्तिमां नहीं धारो खेद
प्रभु थवानी एह उमेद
निर्मोही थै वेद. १

जैन धर्म जगमांही प्रचारो
नामर्दाइ भीति वारो
संघोन्नतिनो करो सुधारो
श्रद्धा उद्यम धारो,
आत्मरूप जैन धर्मने प्यारो
धारी मानव जव नहि हारो
जैनो माटे देहने धारो
तेथी मुक्ति आरो,
जैनोना दोष सामुं न जोशो
तेथी पाप मलीनता धांशो
वंश परंपर उन्नत रहेशो
नहिं तो दुःखथी रोशो
माटे जागी ऐक्यथी रहेशो
संपी स्हाय परस्पर लेशो
परस्पर उपकारने वहेशो
सहु जिननो संदेशो. २
संघनी रक्षा माटे जीवो.
श्रुत ज्ञान छे जगमां दीवो.

धन्य जैन छे जे मरजीवो
प्रभु वचनामृत पीवो
जैन धर्म सम कोइ न धर्म
बीजा सर्वे छंडो चर्म
जेथी पामो साचुं शर्म
अधिकारे करो कर्म,
जैनी थै कर्मोने करवां
महाजननां कर्मो अनुसरवां
अनासक्तिए होय न परवा,
मिथ्या व्हेमो हरवा
एवुं जिननी वाणी प्रकाशे
मोह रहे नहीं तेनी पासे
कार्य करे पण फळ नहीं वांछे
स्वयं प्रभु ए विलासे. ३
द्रव्यभाव सहु शक्ति प्रकाशो
बनो न आसक्तिना दासो
जीवन मंत्रोनो विश्वासो
धारी प्रभु थै जाशो

जैनोनुं जैनोने आपो
संघनी सेवाथी जग व्यापो
अशक्ति टळशे सहु पापो
दुःखीनां दुःख कापो
पद्मावती धरणेंद्रनी भक्ति
प्रगटे जैनोमां सहु शक्ति
टाळंतां दुर्गति आसक्ति
आतम ईश्वर व्यक्ति
सर्व स्वार्पणे भोगी थाशो.
जडता शुष्कपणुं नहि पाशो
देहाध्यासादिक अध्यासो
टाळी सुखिया थाशो. ४

प्रभु महावीर चैत्यवंदन,

त्रेवीश तीर्थंकर कह्या, अनंत शक्तिनाथ
प्रभु महावीर सेवतां, जीवो थाय सनाथ. १
प्रभु महावीर वर्धमान, चोवीशमा जिनराज
कलिमां महावीर जे बने, तेहकरंतो राज. २

द्रव्य भाव बाहिरने, अंतर महावीर थावा
महावीर प्रभुने भजो, थशो जगतुमां चावा. ३
वीर बनीने वीरने, सेवंतां जीवाय.
कलिमां वीर थया विना, जीवतांज मराय. ४
द्रव्यभाव शक्तिवके ए, जीववुं ते वीरभक्ति
बुद्धिसागर वीरनी, ध्यावुं आतमशक्ति. ५

महावीर प्रभुस्तवन.

ए गुण वीर तणो न वीसारु—ए राग.

प्रभु महावीर वंदु गावुं, ध्यावुं जग उपकारीरे
प्रभु महावीर भजतां महावीर थाता नरने
नारीरे. प्रभु० १

तुज वजनामृत मानस सरवर,
हंस बनीने झील्योरे;
अनुभव मौक्तिक ग्रहण करीने,
शुद्ध स्वरूपे खील्योरे. प्रभु० २

नंदनवन सम त्हारां वचनो,
शांति तुष्टि करनारांरे,
उपशम क्षयोयशमने क्षायिक—

आरोग्यनां देनारां रे. प्रभु० ३

विष्णु ज्योतिथी अनंत ज्योति
ताह्यरी अनुभवे दीठी रे;
साकरथी पण अनंत गुणी
ताह्यरी वाणी मीठी रे. प्रभु० ४

विश्वोद्धार कर्यो जन्मीने,
आत्मस्वरूप जणावी रे;
पशु टाळीने मानव कीधा,
अज्ञोने हित लावी रे. प्रभु० ५

धन्य पिता सिद्धार्थ भूपति,
धन्य छे त्रिशला माता रे.
धन्य छे क्षत्रियकुंड नगरने
आर्यभूमि धन्य भ्राता रे. प्रभु० ६

तुज वचनामृत पान कर्याथी.
मारी चक्षु खूलीरे,
तुज गुण ध्यान समाधियोगे
मिथ्या भ्रम गयो भूली रे. प्रभु० ७

आत्ममहावीर तीर्थंकर सहु,
नाम अनेकने एकरे,
परमब्रह्म स्वरूप प्रकाश्युं,
प्रकटयो पूर्ण विवेकरे. प्रभु ८

बाहिरांतर द्रव्य जावथी,
महावीर थावा काजेरे,
कालियुगनी पूर्वे तुं प्रगटयो,
सर्व प्रभु शिर ढाजेरे. प्रभु ए

सर्व वातमां महावीर थावुं,
महावीरजिन उपदेशेरे,
कलियुगमां जैनोमां महावीर,
प्रभुता चित्त प्रवेशेरे. प्रभु० १०

सर्व वीरमां महावीर बनवुं.
सर्वाश्रममां जावेरे,
बाह्यशक्तिने आत्मशक्तिथी,
जीव्युं जगमां जावे रे. प्रभु० ११

जे गुणकर्मो महावीर थात्रा
माटे छे उपयोगीरे,
ते गुण कर्मो ग्रहण करीने;
थावुं आतम योगीरे. प्रभु० १२

उत्पत्ति व्यय ध्रुवतामय छे;
महावीर जगमां एकरे,
तेना गुण कर्मो प्रगटावो;
ए छे सेवा टेकरे. प्रभु० १३

द्रव्यभावथी सर्व शक्तिमय;
कलियुगमांही थावुंरे;
आपत्काले आपद् धर्मे,
रहेवुं ए समजाव्युंरे. प्रभु० १४

आतममांही अनंत धर्मो,
जाणी वीरने सेवोरे;
बुद्धिसागरआतम महावीर,
एकज देवोनो देवोरे. प्रभु० १५

स्तुति.

वीर प्रभुमय जीवन धारो;
सर्व जाति शक्तिथी,
दोषो टाळी सद्गुण लेशो;
बनशो महावीर व्यक्तिथी.

स्वप्ने पण हिम्मत नहि हारो;
कार्योनी सिद्धि करो,
वीर प्रभु उपदेशे कांइ;
अशक्य नहि निश्चय धरो. ॥ १ ॥

भाविभावने मानी लेइ;
उद्यम नहि मूको जनो,
कर्म प्रमाणे थाशे मानी;
आळसु नहि क्यारे बनो.
मृत्यु पासे आवे तोपण;
उद्यम श्रद्धा राखशो,
सर्वे तीर्थंकर उपदेशे;
तेथी शिवफल चाखशो. ॥ २ ॥

श्रुतज्ञानीने उद्यमथी;
सिद्धि सहु वाते थती,
माटे कार्योद्यम नहि चूको;
भूलो नाहि उद्यम गाति.
कलियुगमांही संघ चतुर्विध;
उद्यमथी चढती लहे,
महावीरनी वाणी समजातो;
भक्तोने शक्ति वहे. ॥ ३ ॥
शक्ति अनंती आतममांही;
भूली कयां भूला भमो,
आतमश्रद्धा राखो भव्यो;
दुष्टवृत्तियो दमो.
सत्यशर्म छे आतममांही,
जगमां सुख आशा तजो;
सिद्धायिका सहाय करंती,
उद्यमथी मुक्ति सजो, ॥ ४ ॥

॥ सिद्धाचल स्तवन. ॥

सिद्धाचल यात्रा करो,
भवी साचा भावे;

शत्रुंजयने सेवतां,
रोग शोक न आवे. सिद्धाचल. १

द्रव्यथी शत्रुंजयगिरि;
ज्ञावें आतम पोते,
ध्यान समाधि योगथी;
मळो ज्योति ज्योते. सिद्धाचल. २

शत्रुंजयगिरि नाम सहु,
आतमनां प्रमाणो;
द्रव्य ते ज्ञावनो हेतु छे,
एवो निश्चय आणो. सिद्धाचल. ३

आत्मा असंख्य प्रदेश छे,
तेम गिरि प्रदेशो;
समकित प्रगटे आदिमां,
आदिनाथ महेशो. सिद्धाचल. ४

द्रव्यने ज्ञाव सापेक्षथी,
जेवा भावे ज्ञक्ति;
तेवा फलने पामशो,
तेवी थाशे व्यक्ति. सिद्धाचल. ५

औदयिक भावथी सेवता,
केइ उपशम ज्ञावे;
क्षयोपशम क्षायिकथी,
भाव समफल पावे. सिद्धाचल. ६

द्रव्ज तीर्थ जेथी थयां,
ज्ञाव तीर्थाधार;
विमलाचल वेगे वसो,
ज्ञानी थै नरनार. सिद्धाचल. ७

आत्मिक शुद्धोपयोगथी,
पोते तीर्थ छे देहे;
बुद्धिसागर तीर्थ बे,
शुद्ध आतम स्नेहे. सिद्धाचल. ८

अष्टापद स्तवन.

अष्टापद गिरि सेवना,
भवीज्ञावथी पामे;
अष्ट कर्मने जीतीने,
ठरे मुक्ति ठामे. जष्टापद. १

द्रव्यथी अष्टापद गिरि,
भावे आतम पोत;
आठ पगथियां योगनां,
आरोहवां ज्योते. अष्टापद. २

यम नियम आसन अने,
प्राणायाम ए चार;
हठनां पगथियां चार छे,
चार सहजनां धार. अष्टापद. ३

प्रत्याहारने धारणा,
ध्यान सत्य समाधि;
शुद्धात्म दर्शन प्राप्ति छे,
नासे आधि उपाधि. अष्टापद. ४

चौवीश तीर्थंकरतणी,
मूर्तियो देखे,
दर्शन वंदन ध्यानथी,
मोहभाव उवेखे. अष्टापद. ५

आठ पगथियांपर चढी,
परमातम जोवे;

बुद्धिसागर आतमा,
सिद्ध महावीर होवे. अष्टापद. ६

आबुजिन चैत्य स्तवन.

आबु पर्वत रणियामणोरे लोल,
जिनमंदिर जयकाररे;
विमळशाहे करावीयां रे लोल,
जिन प्रतिमा सुखकाररे. आबु. १
वस्तुपालने तेजपालनांरे लोल,
मंदिर देव विमानरे;
जिन प्रतिमाने वंदतांरे लोल,
प्रगटे हर्ष अमानरे. आबु. २
अवचलगढ जिन मंदिरोरे लोल,
वंदो पूजो भव्यरे;
आतम गुण प्रगटाववारे लोल,
मानवभव कर्तव्यरे. आबु. ३
जिनमंदिर बीजां भलांरे लोल,
दर्शनथी दुःख जायरे;

ध्यान समाधि स्थिरता वधेरे लोल,
आरोग्य आनंद थायरे. आबु. ४
द्रव्यने भाव बे भेदथीरे लोल,
यात्रा करंतां बेशरे;
बुद्धिसागर आत्ममांरे लोल,
सहजानंद हमेशरे. आबु. ५

सम्मेत शिखर स्तवन.

सम्मेतगिरि अति शोभतोरे लोल,
सिद्धया तीर्थंकर वीशरे.
द्रव्य भाव यात्रा कररे लोल;
विघटे रागने रीसरे. सम्मेत. १
जिन मंदिर प्रभु वंदतांरे लोल,
आनंद प्रगटे अपाररे;
यात्रा करे अनुभव थतोरे लोल,
नासे कर्म विकाररे. सम्मेत. २
भाव सम्मेत शुद्धातमारे लोल,
दर्शन स्पर्शन थायरे.

अनुभव ज्ञाने ध्यावतांरे लोल,
पोते प्रभुपद पायरे. सम्मेत. ३

साधने योगे साध्यनी सिद्धि ठेरे लोल,
मनशुद्धिना उपायरे;
जेजे द्रव्यथी करवा घटेरे लोल,
करवा ते हित लायरे. सम्मेत. ४

द्रव्यने भावथी जिन प्रतिमा भलीरे लोल,
द्रव्यने भावथी सेवरे;
बुद्धिसागर आतमारे लोल,
आविर्भाव देवरे. सम्मेत. ५

गिरनारनेमिजिन स्तवन.

(समकितद्वारगभारे पेसतांजी ए राह.)

गिरिनार पर्वत नेमि वंदतांरे,
ध्यावतां शिवसुख थायरे;
दीक्षा केवलने मुक्ति नेमिनीजी,
कल्याण भूमि सुहायरे. गिरनार १

नेमिनाथ गुण गावतांजी,
गुण प्रकटे निर्धाररे.
कारण पामी कारज संपजेजी;
यात्रा करो सुखकाररे. गिरनार. २

नेमिजिनेश्वर मंदिर शोभतुंजी,
स्वर्ग विमान समानरे;
नेमि प्रतिमा दर्शन करेजी,
नासे दोषनी खाणरे. गिरनार ३

नेमि जिनेश्वर सरखो आतमाजी,
नेमिना ध्यानथी थायरे;
टळे उपाधि आधि यात्रथीजी,
निवृत्ति सत्य प्रगटायरे. गिरनार ४

निवृत्ति माटे तीर्थनी सेवनाजी,
आतम निःसंग थायरे;
बुद्धिसागर आत्मनीजी,
शुद्धदशा प्रगटायरे. गिरनार. ५

सर्व साधारण तीर्थ स्तवनम्.

सर्व तीर्थ जयकार—
नमुं हुं सर्व तीर्थ जयकार—
तारे ते तीर्थ ज सार नमुं.
ऊर्ध्व लोकने अधोलोके सहु,
तीर्थ जे चार निक्षेप. नमुं.
मृत्युलोकमां स्थावर जंगम,
तीर्थ भजे नहीं लेप. नमुं. १
व्यवहारने निश्चय तीर्थो,
उपादान निमित्त. नमुं.
दर्शन ज्ञानने चारित्र तीर्थज,
सेव्यां आत्म पवित्र. नमुं. २
आत्मोन्नतिने आत्म शुद्धि कर,
संघोन्नतिकर जेह;
गुरु देवादि तीर्थो सर्वे,
नमीए ध्याइए एह. नमुं. ३
संघ चतुर्विध संख्यावृद्धि,
सेवा भक्ति सार;

जंगम तीर्थथी स्थावरतीर्थज,
प्रगटे छे हितकार. नमुं. ४

आतम तीर्थ छे सर्व तीर्थनो,
नायक मुख्याधार;
आत्मशुद्धिकर सर्वे तीर्थो,
सेवो नरने नार. नमुं. ५

सानंद शहेरे आनंद ल्हेरे,
वांद्या सहु देवेश;
ओगणीश सत्तोतर आश्विननी,
बीज तिथि सुविशेष. नमुं. ६

तपागच्छ सागर शाखामां,
सुखसागर गुरुराज;
चोमासी देववंदन रचतां,
सिद्ध्यां सघलां काज. नमुं. ७

सानंद संघना भक्तिभावथी,
भणवा गणवा हेत;

बुद्धिसागरसूरि सिद्धि,
पूर्णानंदने देत. नमुं. ७

शाश्वताशाश्वता जिन चैत्यवंदन.

शाश्वत प्रतिमाओ घणी प्रथमादि स्वर्गे जे रही.
जिनभावस्मृतिथी वंदतां उपयोगनी शुद्धि वही.
ज्योतिषीनां सर्वे विमानो त्यां प्रतिमा निर्मली;
व्यंतर भुवनमां जे रही वंदु हुं प्रेमे लळी लळी १
जे जेज मानव लोकमां ते तेज वंदु भावथी;
सिद्धांत आगममां कही भावे स्मरुं गुण दावथी.
ऋषभादि चारे नामथी शाश्वत प्रतिमा ध्याइए.
शत्रुंजयादि तीर्थस्थित अशाश्वती मन लाइए, २
पाताळ मृत्यु लोकमांने स्वर्गमांही वंदीए;
नामादि तीर्थो सर्वने वंदीने कर्म निकंदीए.
परमात्मप्रतिनिधि तीर्थ जे आत्मार्थ उपशम आदिये;
बुद्ध्यब्धि भक्तिभावथी उपयोगथी मन लावीए. ३

शाश्वताशाश्वतजिननी चार थोयो.

शाश्वत प्रतिमाओ सहु वंदो;
स्वर्ग मृत्यु पातालेजी;

आतमना उपयोगे रहेवा,
निजगुण जे अजवाळेजी;
नामादिनिक्षेपा चारे,
अवलंबन हितकारीजी;
निश्चयने व्यवहारे वंदी,
पामो सुख नरनारीजी. १

शाश्वतीने अशाश्वती प्रतिमा,
नयनिक्षेपे जाणोजी;
अर्हत् प्रतिनिधि क्षयोपशमना,
भावे मनमां आणोजी;
एकमां सर्वे सर्वमां एकज,
एकानेक विचारोजी;
चढताभावे सापेक्षाए,
वंदीने घट धारोजी. २

प्रभु महावीर जिनवरवाणी,
आगम शास्त्र प्रमाणीजी;
कलियुगमां आधार खरो ए,

जाणी मनमां आणीजी;
सूत्रोमां जिनप्रतिमा त्राखी,
आराधो भवी प्राणीजी;
प्रभुनी वाणी मुक्तिनिशानी,
अनंत गुणनी खाणीजी. ३

सम्यग्दृष्टि देवो सघळा,
देवीओ प्रभु गावेजी;
प्रभुप्रतिमाओने वंदे,
पूजे घटमां ध्यावेजी;
द्रव्यने भावथी व्यवहार निश्चय,
उपादान निमित्तेजी.
बुद्धिसागर तीर्थ प्रतिमा,
पूजो निर्मल चित्तेजी. ४

शाश्वताशाश्वत चैत्यवंदन करी–नमुथ्थुणंकही –अरिहंत–चेइआणं–अन्नथ्थ कही–एक लोगस्स–चंदेसुनिम्मलयरा सुधीनो काउसग्ग करी एक जणे काउसग्ग पारी मोटी शांति कहेवी. बीजा काउसग्ग-

मां सांभळे, पछी लोगस्स कही तेर नवकार गणवा. सिद्धाचलनो दुहो कही तेर खमासणां देवां. संपूर्ण॥

महावीर चैत्यवंदन.

ॐ अर्हंश्री महावीर–वर्धमान जिनेश्वर,
शांतिं तुष्टिं महापुष्टिं–कुरु स्वेष्टं द्रुतं प्रभो. ॥१॥
सर्वदेवाधिदेवाय, नमो वीराय तायिने,
ग्रहभूतमहामारीं, द्रुतं नाशय नाशय. ॥२॥
सर्वत्र कुरु मे रक्षां–सर्वोपद्रव नाशतः,
जयं च विजयं सिद्धिं, कुरु शीघ्रं कृपानिधे. ॥३॥
त्वन्नाम स्मरणाद्देव, फलतु मे वांछितं सदा,
दूरीभवन्तु पापानि, मोहं नाशय वेगतः ॥४॥
ॐ ह्रींअर्हं महावीर–मंत्र जापेन सर्वदा,
बुद्धिसागरशक्तीनां, प्रादुर्भावो भवेद्ध्रुवम्. ॥५॥

महावीर चैत्यवंदन.

प्रभु महावीर जगधणी, परमेश्वर जिनराज;
श्रद्धा भक्ति ज्ञानथी, सार्यां सेवक काज. ॥१॥

काल स्वभावने नियति, कर्मने उद्यम जाण;
पंच कारणे कार्यनी, सिद्धि कथी प्रमाण. ॥२॥
पुरुषार्थ तेमां कह्यो, कार्य सिद्धि करनार;
शुद्धात्मा महावीर जिन, वंदु वार हजार. ॥३॥
महावीर महावीर ध्यावतांए, महावीर आपो आप;
बुद्धिसागर वीरनी, साची अंतर छाप. ॥४॥

महावीर चैत्यवंदन.

प्रभु महावीर वंदतां, प्रगट्यो हर्ष अपार;
उत्पत्ति व्यय ध्रुवमय, भाख्यां द्रव्यो सार. ॥१॥
बाहिर अंतर आतमा, परमातम त्रण भेद;
भाख्या केवल ज्ञानथी, करी घातीनो छेद. ॥२॥
हृदय विषे तुजने धरी, करी शुद्ध उपयोग,
ज्योति ज्योति मिलावशुं, टाळी कर्मना रोग. ॥३॥
तुज ध्याने रसिया बनीने, साधीशुं निज काज;
बुद्धिसागर वीरनुं, पामीशुं साम्राज्य. ॥४॥

सिद्धाचल चैत्यवंदन.

सिद्धाचल गिरि वंदीए, द्रव्य भावथी बेश;
द्रव्य भाव गिरि जाणतां, रहे न मनमां क्लेश. ॥१॥
सात नयोथी जाणीने, विमलाचल ध्यानार;
अवश्य मुक्तिपद लहे, शुद्धातम पद सार. ॥२॥
निर्विकल्प स्वभावथी ए, तीर्थज आपो आप;
बुद्धिसागर संपजे, रहे न दुविधा ताप. ॥३॥

महावीर स्तोत्रम्

ॐ अर्हं ह्रीं महावीर, सर्पविषं हर द्रुतम्;
दुष्टरोगविनाशेन, रक्ष रक्ष महा विभो. १
त्वन्नामजांगुलीमंत्र, जापेन सर्व देहिनाम्;
तक्षकादिमहासर्प–विषं नश्यतु तत्क्षणम् २
ग्रन्थिकज्वर नाशोऽस्तु, भूतबाधां विनाशय;
वातपित्तकफोद्भूतान्, सर्व रोगान् क्षयं कुरु ३
जलेस्थले वने युद्धे, सभायां विजयं कुरु;
ॐ अर्हंस्रौं महावीर, वर्धमान नमोऽस्तु ते. ४

महावीर स्तोत्रम्.

ॐ ह्रीं अर्हं महावीर, विंशद् यंत्रप्रकाशक;
वृश्चिकसर्पजातीनां, विषं नाशय वेगतः १
ॐ हंस क्लींमहाहंस–वर्धमानजिनेश्वर;
सर्वजातिविषाद् रक्ष–त्वन्नामजापकस्य मे. २

महावीर स्तोत्रम्.

ॐ ह्रींअर्हं महावीर, केवलज्ञान भास्कर;
वीतराग महादेव, नमोऽस्तुते जिनेश्वर. १
त्वमेव सर्व जीवानां, जीवकोऽसि जगत्प्रभो;
ब्रह्माविष्णुर्हरोऽसि त्वं, सर्वदा मे शिवं कुरु. २
पूर्णशुद्धात्मदेवस्त्वं, सोऽहं तत्त्वमसिस्वयम्. ३
शांतिं तुष्टिं महापुष्टिं–श्रियं च कुरु सत्वरम्. ३

स्तुति.

प्रभु महावीर जिनवर ध्याइए, प्रभु गुणने प्रेमे गाइए;
गुणगाइ गुण प्रगटावीए, निश्चय महावीर पद पावीए. १
चोवीश तीर्थंकर केवली, प्रणमुं वंदु ते लळीलळी;

जिनवर ध्याइ जिनवर थावुं, आतम परमातम पद जावुं. २
जिनवाणी वेदागम जाणो, समजीने उपयोगे आणो;
जिन वाणीथी आतम शुद्धि, करवी एवी धारो बुद्धि. ३
यक्षोने यक्षीणीओ स्हाये, आवे छे भक्तोनी प्राये;
उपासना भक्ति जे धारे, न्याये देवो आवे व्हारे. ४

वीरप्रभुनी चार स्तुतिनी एक स्तुति.

वीरप्रभु परमातमा, परमेश्वर देवा,
चोवीश तीर्थंकर जिनो, जेओ आपे मेवा;
तेओनी वाणी भली, शुद्ध आतमकारी,
देव देवीओ सेवती, शासन हितकारी १

चार थोयनी एक थोय.

प्रणमुं श्री महावीर, सर्वविश्वहितकारी,
चोवीशे जिनवर, तीर्थंकर अवतारी;
जैनागम सूत्रो, ग्रन्थो ज्ञान प्रकाशी,
देवो देवीओ, शासन सेव विलासी.

च्यार थोयनी एक स्तुति.

प्रभुमहावीरदेवजिनेश्वरम्,
सकलतीर्थपतिं अचलेश्वरम्;
प्रतिदिनं प्रणमामि जिनागमम्
कुरु हि यक्षिणी संघ सहायताम्.

च्यार थोयनी एक स्तुति.

वीर जिनेश्वर केवली, जेनुं शासन आजे,
तीर्थंकर सर्वे नमुं, जेओ जगमां गाजे;
जैनधर्म प्रगटावीयो, जेनो आदि न अंत,
शासन देवनी सहायथी, दुःख पासे न संत. १

च्यार थोयनी एकबीजनी स्तुति.

महावीर समकित बीजने, कहे केवलज्ञाने,
तीर्थंकर सर्वे कहे, चंद्र सरखी प्रमाणे;
सर्व धर्मनुं बीज छे, जैनधर्म अनादि,
सिद्धायिका टाळती, सर्व संघ उपाधि. १

चार थोयनी एक पंचमीनी स्तुति.

समवसरणमां बेसीने, प्रभु वीरे प्रकाशी,
पंचमी सहु तीर्थंकरे, कथी ज्ञानविलासी;
जिनवाणी सहु वेदना—सत्य वेद समानी,
शासन देवीओ संघनी, करे भक्ति वखाणी. १

आठमनी थोयो—एक स्तुति.

चार थोयनी एक थोय.

अष्टमी अष्टमी गतिदिये, महावीर प्रकाशे,
सर्वे तीर्थंकर कथे, आठ कर्म विनाशे;
केवलज्ञान प्रकाशती, श्रुतज्ञाने आराधे,
शासन देवनी स्हायथी, संत मुक्तिने साधे. १

अगियारसनी स्तुति.

चार स्तुतिनी एक स्तुति.

एकादशी अति उजळी, वीरदेवे प्रकाशी,
कृष्णे पाळी तेमना, उपदेशथी खासी;
ज्ञानावरणने टाळीने, शुद्धज्ञान प्रकाशे,

देव देवीओ संघनी, करी भक्ति उजाशे. १

चैत्री पुनमनी स्तुति.

चार स्तुतिनी एक स्तुति.

चैत्रीपुनम विमलाचले, तप वीरे भाख्युं,
तीर्थंकर सर्वे भलुं, मुक्तिफल दाख्युं;
सिद्धाचलना ध्यानथी, शुद्ध ज्ञानने मुक्ति,
शासनदेवो सारता, यात्रीओनी भक्ति. १

सिद्धाचलनी स्तुति.

द्रव्यभावथी सिद्धाचलगिरि—बाहिर अंतर जाणोजी.
सात नयोनी सापेक्षाए, समजी मनमां आणोजी;
निमित्त कारण उपादानथी, सिद्धाचलने सेवोजी,
बुद्धिसागर वीरप्रभुजी, भाखे त्रिभुवन देवोजी. १

सिद्धाचल स्तुति.

निमित्त विमलाचल तीरथ छे, आतम शुद्धिकारीजी,
उपादान आतम शत्रुंजय, चिदानंद गुण धारीजी;

असंख्य प्रदेशी कांकरे कांकरे, ध्याने स्थिर थनाराजी,
अनंत सिद्धया सीजशे साधु-बुद्धिसागर प्याराजी. १

आंबील तपनी चार स्तुतिनी स्तुति.

वीरप्रभुए आंबिल तपने, नाख्यु नावि हितकारीजी,
अर्हन् सिद्धने सूरि वाचक, मुनि सेवा सुखकारीजी;
दर्शन ज्ञान अने चारित्रज, तप सेवो श्रुतधारीजी,
शासन देवो स्हाय करे सहु, द्रव्य नाव सुखकारीजी.१

सीमंधर जिन स्तुति.

महाविदेहे सीमंधरजिन, वैदेही देहे ठता,
केवलज्ञानी आतमरामी, उपकारी जगमां ठता;
द्रव्यभावथी अंतर बाहिर, उपशम आदि नावथी,
सीमंधरजिन वंदु ध्यावुं, आत्मिक सीमादावथी. १

श्री महावीर प्रभुनी स्तुति.

उदयिक नावे प्रशस्य वीरो, वंदे ध्यावे भावथी,
उपशम क्षयोपशम भावे सहु, वीरो ध्यावे दावथी.

सर्व वीरनो प्रभु महावीर, शुद्धातम ध्यावुं प्रभु;
ब्रह्मादिक ध्यावे छे जेने, एवा वीर नमुं विभु. १
क्षायिक भावे प्रभु महावीर, आतम थावे ज्ञानथी;
आतम ते परमातम पोते, सत्ताने व्यक्तिथकी.
देखो दिलमां आतम महावीर, भाखे सर्वे जिनपति;
शुद्धात्मा थावाथी सहुमां, भेद रहे नहि कंइ रति. २
आगमवेदो शास्त्रो सर्वे, सात नये जाण्याथकी;
सम्यग् आतम ज्ञान प्रकाशे, ज्ञानी जातो नहि छकी,
सापेक्षाए सर्वे तत्त्वो, जाणी आतममां रमे;
आत्मशुद्धि हेते सहु शास्त्रो, जाणे ते नहि भवभमे. ३
आत्मानी ज्ञानादि शक्ति, उपादानथी देवता;
दर्शन ज्ञानमयी छे आतम, जैनो तेने सेवता;
निष्कामी आतमने सेवे, देवो देवीओ मुदा;
द्रव्यभावथी महावीर भक्तो, शक्तिमंतो सर्वदा. ४

बीजनुं स्तवन

बीज तिथिए जैनधर्मनुंरे लाल,
बीज ग्रहो समकितरे. हुंवारी लाल;

देव गुरुने जैन धर्मनीरे लाल,
श्रद्धा समकितरीतरे, हुंवारीलाल. बीज. ॥ १ ॥
अनंतच्चार कषायनोरे लाल,
त्रण मोहनी तेमरे हुंवारी लाल;
सात प्रकृति उपशमे यदारे लाल,
त्यारे समकित नेमरे; हुंवारीलाल. बीज. ॥२॥
सातनो क्षयोपशम क्षयेरे,
क्षयोपशम क्षायिकरे. हुंवारीलाल.
व्यवहार समकित साधतांरे लाल,
निश्चय समकित एकरे. हुंवारीलाल; बीज. ॥३॥
निश्चय समकित मुनिपणेरे,
चारित्र भेगुं सुहायरे. हुंवारीलाल.
चार निक्षेपे सात नये करीरे लाल,
समकित गुण प्रगटायरे; हुंवारीलाल.बीज. ॥४॥
चारित्र मोह निवारतोरे लाल,
चूके न उद्यम तेहरे; हुंवारीलाल,
समकित ते दर्शन जहुंरे,

चरणे लहे शिवगेहरे, हुंवारीलाल. बीज. ॥५॥
समकित उत्कृष्ट भावथीरे, लाल,
क्षणमांही मुक्ति थायरे; हुंवारीलाल,
समकित सरुसठ बोलछे रे लाल,
ज्ञाने निश्चय पायरे, हुंवारीलाल. बीज. ॥६॥
निश्चयना षट्भेद छेरेलाल,
पामे रहे नहीं खेदरे; हुंवारीलाल बीज.
समकित रुचि दश जातनीरे लाल,
जाणी टाळो भेदरे, हुंवारीलाल. बीज. ॥७॥
जलपंकजवत् समकितीरे लाल,
निर्लेपी कर्तव्यरे, हुंवारीलाल,
गुरुश्रद्धा भक्ति वरेरे रेलाल,
श्रवणादिकथी भव्यरे; हुंवारीलाल. बीज.॥८॥
शुद्धातम निश्चय थतांरेलाल,
अनुभव आनंद थायरे, हुंवारीलाल;
बुद्धिसागर समकितीरेलाल,
सम्यग्ज्ञाने सुहायरे, हुंवारीलाल. बीज. ॥९॥

पांचमनुं स्तवन.

पंचमी तप तमे करोरे प्राणी–ए राग.

पांचमे ज्ञान आराधना करतां,
ज्ञानावरण पलायरे,
मतिश्रुत अवधिने मन पर्यव,
केवल प्रगट सुहायरे. पांचमे. १

चक्षु अचक्षु अवधिने केवल,
दर्शन प्रगटी सुहायरे;
मतिश्रुतनुं अज्ञान टळेने,
विभंग झट विणसायरे. पांचमे. २

मति अठ्ठावीश त्रणसे चालीस,
भेदे घट प्रगटायरे;
चउद वीश भेदे श्रुतज्ञानी,
केवली सरखो थायरे. पांचमे. ३

अवधि ज्ञान असंख्य प्रकारे,
मनपर्यव बे भेदरे;
केवल ज्ञानमां भेद न बीजो,
प्रगटे फळती उमेदरे. पांचमे, ४

गुरुगमथी मतिश्रुत बे प्रगटे,
आत्मानुभव थायरे;
बुद्धिसागर गुरुनी सेवा,
करतां ज्ञान सुहायरे. पांचमे. ५

अष्टमीनुं स्तवन.

वीर जिनवर एम उपदिशे—ए राग.

महावीर प्रभु तप उपदिशे,
अष्टमीनुं सुखकाररे;
आठ प्रकारे मद त्यागतां,
अष्टमी गति मळे साररे. वीर प्रभु. १
पांच समिति त्रण गुप्तिने,
साधतां थाय समाधिरे;
योगनी दृष्टियो आठ छे,
पामतां होय न आधिरे. वीर. २
अष्टांग योगनी साधना,
अनुक्रमथी करनाररे;
साध्य सिद्धिपद झट लहे,

आनंद पूर्ण अपाररे. वीर. ३
अष्टमीदिन कल्याणको,
तीर्थेशनां थयां वेशरे;
बुद्धिसागर शुद्ध आतमा,
साध्यासिद्धे टळे कलेशरे. वीर. ४

एकादशीनुं स्तवन.

वीर जिनवर एम उपदिशे ए राग

महावीर जिनवरे उपदिश्युं,
एकादशी तप वेशरे;
कृष्णे आराधन आदर्युं,
टाळवा रागने द्वेषरे महावीर० १
बहु जिनवर कल्याणको,
एकादशी दिन जाणरे;
निष्कामभावथी सेवतां,
प्रगट थतुं शुद्ध ज्ञानरे. महावीर० २
ज्ञान प्रथम दया छे पछी,
ज्ञान पछी क्रिया जोयरे;

ज्ञान पछी तप प्रगटतुं,
ज्ञानथी चारित्र होयरे. महावीर. ३
शुद्धोपयोगथी ज्ञानीने,
कर्मनो होय न बंधरे;
सर्व करे छतां संवरी,
कर्म क्रियामां अबंधरे. महावीर० ४
एकादशी तप सेवतां,
अष्ट सिद्धि नवनिधिरे;
बुद्धिसागर गुरु सेवतां,
क्षायिक लब्धि समृद्धिरे. महावीर० ५

नव पद ओळी स्तवन.

नव पद ओळी तप आराधन,
करतां शिव सुख थावेरे;
रोग शोक दुर्बुद्धि विघटे,
अष्ट सिद्धि घर आवेरे. नव० १
द्रव्यने भावथी नवनिध प्रगटे,
नव पद ध्यानने धरतांरे;

ब्रह्मचर्य नव वाडो धारी,
नरनारी सुख वरतांरे. नव० २

नवपद्रूपी आतम पोते,
उपादानथी जाणीरे;
निमित्तथी पर जाणी भावे,
आराधंतो ज्ञानीरे. नव० ३

षट्चक्रोमां नवपद्ध्याने,
आत्मसमाधि प्रगटेरे;
एकता स्थिरता लीनता योगे,
घाती कर्मो विघटेरे. नव० ४

प्रभु महावीर देवे भाखी,
नव पद गुण गुणी ज्ञावेरे;
बुद्धिसागर आत्मस्वरूपो,
नव पद सत्य सुहावेरे. नव पद० ५

तारंग तीर्थ अजित जिनेश्वर स्तवन.

तारंगा गढ अजित जिनेश्वर,
पूजतां सुख थायरे;

अजित बने निज आतम ध्याने,
मोह ते भाग्यो जायरे. तारंगा० १
भ्रमरी संगे इयल भ्रमरी,
रूपने ध्याने पायरे;
तेम प्रभुना ध्याने रहेतां,
आतम तद्रूप थायरे. तारंगा० २
द्रव्य भावथी यात्रा करवी,
प्रभुनी सद्गुण वरवारे;
सेवा पूजा गायन भक्ति,
प्रभु गुणने अनुसरवारे. तारंगा० ३
प्रभु सम गुण निज आतममांही,
तेहनो आविर्भावरे;
करवा साधन यात्रादिक सहु,
चूके न समकिती दावरे. तारंगा० ४
आतमनी शुद्धि करवाने,
तुज अवलंबन लीधुंरे;
बुद्धिसागर साध्योपयोगे,
निज सुख निजने दीधुंरे. तारंगा० ५

पानसर महावीर प्रभु स्तवन.

पानसरा महावीर जिनेश्वर,
वांद्या भेटया भावेरे;
पुण्योदयथी दर्शन पूजा,
कीधी आतम दावेरे. पानसरा० १

प्रभु दर्शन करतां निजदर्शन,
आत्मप्रभुता जागेरे;
श्रद्धाप्रेमथी आत्मार्पणने,
करतां मोहनी भागेरे. पानसरा० २

मतिश्रुत ज्ञान प्रगटतां दर्शन,
भावथी प्रभुनुं थायरे;
आत्मानुभव झांखी थातां,
प्रभुता निज प्रगटायरे. पानसरा० ३

तुज रूप ध्यातां तुजरूप थावुं,
निश्चय छे निर्धाररे;
पतिव्रता सम नवधा भक्ति,
ताह्यरी शिव दातारे. पानसरा० ४

कलिकाले तुज शरणुं कीधुं,
स्वार्पण करीने सर्वरे;
नाम रूपनो मोह रह्यो नहीं,
तुज भक्तिमां अगर्वरे पानसरा० ५
अर्पाइ तुजमां हुं भावे,
करुं ते त्हारी भक्तिरे;
बुद्धिसागर आत्ममहावीर,
प्रगटे अनंती शक्तिरे. पानसरा० ६

पंचासर पार्श्वनाथ स्तवन.

पार्श्व पंचासरा जगत्मां जयकरा,
पूर्ण आनंद दरियो सुहागो;
शुद्ध आत्म प्रभु वीतरागी विभु,
पूर्ण ज्योति स्वरूपे में ध्यागो. पार्श्व० १
रोग नहि शोक नहि सर्व चिंता रहित,
सर्व भीति रहित आत्म वरवा;
शुद्ध क्षायिक तुजरूप संभारतां,
तत्क्षण मोह नहीं शोक परवा. पार्श्व० २

जेवुं छे ताह्मरुं रूप आविःभलुं,
माह्मरुं तेहवुं रूप नक्की;
माह्मरी ताह्मरी एकता अनुभवी,
जीवतां मुक्तिनी झांखो वकी. पार्श्व० ३
भार शो ? दुःखनो ज्ञान आगळ टके,
भानु त्यां तम रहे केम क्यारे;
तुज देखे थतो आत्म उपयोग मुज,
पूर्ण आनंद वहेतो ज त्यारे पार्श्व० ४
माह्मरो ताह्मरो भेद ज्यां छे नहीं,
एक आनंदरूपे प्रकाश्यो;
बुद्धिसागर परिपूर्ण शक्तिमयी,
आतमा आत्मरूपेज भास्यो पार्श्व० ५

चारूप पार्श्वनाथ स्तवन.

चारूप पार्श्वजिनेश्वर वंदु, गावुं ध्यावुं प्रेमेरे,
द्रव्यक्षेत्र कालभावे अनंतु, सत्यरूप छे क्षेमेरे.चा० १
शुद्ध स्वरूपे परिणमवामां, भक्तियोगने सेवारे,
तुज उपयोग ते ज्ञानयोग छे, प्रगट रूप निज देवारे चा०२

आत्मोपयोगे कर्म न लागे, तन्मय तुजथी थातारे,
अनंत पूर्वभवोनां कर्मो, क्षणमां दूर पळातांरे चा० ३
एक एक योगे जगलोको, अनंत मुक्ति पाम्यारे,
असंख्य योगो जाणी ज्ञाने, ज्ञानीओ विश्राम्यारे, चा० ४
सर्वनयोनो सापेक्ष द्रष्टि, योगे योगो अभेदरे,
बुद्धिसागर शुद्धातममां, रहे न योगनो खेदरे चा० ५

झघडिया आदिनाथ स्तवन.

आदि जिनेश्वर गातां ध्यातां, रहे न झघडा कोयरे,
शुद्धप्रेमथी प्रगट प्रभुता, आनंद हेली जोयरे. आ० १
मन वाणी काया तुज हुकमे, वर्ततां निज राज्यरे,
आत्माना ताने सहु योगो, एज प्रभु साम्राज्यरे. आ० २
रत्नत्रयी स्थिरता लीनतामां, प्रगटे निश्चय तानरे,
बुद्धिसागर आत्मोपयोगे, सर्वे भळ्या मन मानरे. आ० ४

समाप्त.

नवपद ओळीनुं स्तवन.

प्रीतलडो बंधाणी ए अजित जिणंदशुं–ए राग.

नवपद ओळीरे कीजे अतिशय भावथी, श्रीपालमयणा पेठे नरने नारजो; अरिहंतसिद्धने सूरि वाचक मुनिवरा, दर्शन ज्ञान चरण तप नव सुखकारजो. नवपद० ॥ १ ॥ पद पद आंबोल नवकारवाळी वीशने, गणीए करी षट् आवश्यक वेशजो; कर्म निकाचित रोगो आ भवमां टळे, उपसर्गो संकट नासे सहु कलेशजो. नवपद० ॥ २ ॥ नवधा क्षायिक ऋद्धि आतम संपजे, जन्म जराने मृत्यु भयनो नाशजो; आतम ते परमातमभावे उल्लसे, अनंत आनंद अनुभव प्रगटे खासजो. नवपद० ॥ ३ ॥ गुरुगम लहीने नवपद ध्याने रीझीए, समता भावे,सुखदुःख सहीए सर्वजो: दुःखनी वखते दीनपणुं नहि धारीए, सत्ता लक्ष्मीनो नहीं करीए गर्व जो. नवपद० ॥ ४ ॥ द्रव्यभाव व्यवहारने निश्चय नयथकी, भेदाभेदे नवपद सत्य स्वरूपजो; बुद्धिसा-

गर आराधंतां आतमा, निजमां नवपद ऋद्धि प्रगटे अनुपजो. नवपद० ॥ ५ ॥

वर्धमान आंबिलतप स्तवन.

दान सुपात्रे दीजेहो भविका दान सुपात्रे दीजे.

ए राग.

वर्धमान जिन वंदु हो भावे वर्धमान जिन वंदु; आतम भावे आणंदु हो भावे, वर्धमान जिन वंदु. वर्धमान आंबिल तप भाख्युं, परमातम पद वरवा; एकादिक आंबिल एम चढतां, शत आंबिल एम करवां हो. भावे० ॥ १ ॥ एक आंबिल करी उपवास पश्चात्, बे आंबिल उपवासे; चढते आंबिल उपवास अंतर, वीसे विश्राम वासे हो. भावे० ॥२॥ नवपदमांथी गमे ते पदनो, जाप ते वीश हजार; बार खमासण लोगस बारनो, कायोत्सर्ग विचारहो. भावे० ॥ ३ ॥ गुरुमुखथी विधि पूर्वक उच्चरी, पूर्ण थतां उझवीए; तद्भव त्रीजा भवमां मुक्ति, जू ठुं

कांइ न लवीए हो. भावे० ॥ ४ ॥ चौद वर्ष त्रण मासने उपरे, वीशे दिवसे पूरो; विश्रामवण तप आराधंतां, तप रहे न अधूरो हो. भावे० ॥ ५ ॥ पांच हजार पच्चास छे आंबिल, उपवास शत निर्धार; पूर्ण करे वडभागी तपिया, लब्धि शक्ति भंडार हो. भावे० ॥ ६ ॥ आहारादि विषयोमां रसवण, आतम आनंद रसिया; क्षणमां मुक्ति पामे निश्चय, भाव तपे उल्लसिया हो. भावे० ॥ ७ ॥ अंतगड सूत्रने आचार दिनकरे, श्रीचंद केवली साध्युं: बुद्धिसागर आत्मोल्लासे; महासेनजीए आराध्युं हो. भावे० ॥ ८ ॥

जिनेश्वरस्तवनचतुर्विंशातिका

(१)

(राग देशाख.)

परमप्रभुता तुं वर्यो, स्वामी ऋषभजिणदं;
ध्याने गुणठाणे चढी, टाळया कर्मना फंद. पर. १
अंतरंगपरिणामथी, निज ऋद्धि प्रकाशी;
क्षायिकभावे मुक्तिमां, सत्यानंदविलासी. पर. २
कर्ता कर्म करण वळी, संप्रदान स्वभावे;
अपादान अधिकरणता, शुद्धक्षायिकभावे. पर. ३
नित्यानित्य स्वभावने, सदसत् तेम धारो;
वक्तव्यावक्तव्यने, एकानेक विचारो. पर. ४
आठ पक्ष प्रभुव्यक्तिमां, षड् गुण सामान्य;
सात नयोथी विचारतां, प्रभुव्यक्ति सुमान्य. पर. ५
स्मरण-मनन एक तानमां, शुद्धव्यक्तिमां हेतु;
तुज सरखुं मुज रूप छे, भवसागरसेतु. पर. ६
सालंबनमां तुं वर्यो, निरालंबन पोते;
बुद्धिसागर ध्यानथी, निजने निज गोते. पर. ७

२ अजितनाथस्तवन.

(श्रीरे सिद्धाचळ भेटवा—ए राग.)

अजितजीनेश्वरदेवनी, सेवा सुखकारी;
निश्चय ने व्यवहारथी, सेवा जयकारी. अजीत. १
निमित्त ने उपादानथी, सेवन उपकारी;
द्वेष खेद ने भय तजी, सेवो हितकारी. अजीत. २
दुर्लभ सेवन इशनुं, धातोधातें मळवुं;
परपरिणामने त्यागीने, शुद्धभावमां भळवुं. अजीत. ३
षट्कारक जीवद्रव्यमां, परिणमतां ज्यारे;
त्यारे सेवन सत्य छे, भवपार उतारे. अजीत. ४
निर्विकल्प उपयोगथी, नित्य सेवो देवा;
निज निज जातिनी सेवना, मीठा शिवमेवा. अ० ५
परमप्रभु निजआगळे, सेवनथी होवे;
बुद्धिसागर सेवतां, निजरूपने जोवे. अजीत. ६



३ संभवनाथस्तवन.

(राग उपरनो.)

संभवजिनवर जागतो, देव जगमां दीठो;
अनुभव-ज्ञाने जाणतां, मन लागे मीठो. सं. १
प्रगटे क्षायिक लब्धियो, संभजिनध्याने;
संभवचरणनी सेवना, करतां सुख माणे. सं. २
संभवध्याने चेतना, शुद्ध ऋद्धि प्रगटे;
वीर्योल्लासनी वृद्धिथी, मोह-माया विघटे. सं. ३
संभव-दृष्टि जागतां, संभवजिनसरिखो;
आलंबन संभवप्रभु, एकताए परखो. सं. ४
संभवसंयमसाधना, साची एक भक्ति;
बुद्धिसागर ध्यानमां, ज्ञान-दर्शनव्यक्ति. सं. ५



४ अभिनंदनस्तवन.

(राग उपरनो.)

अभिनंदनअरिहंतनुं, शरणुं एक साचुं;
लोकोत्तर चिन्तामणि, पामी दिल राचुं. अ. १

लोकोत्तर आनंदना, परमेश्वर जोगी;
शाता–अशातावेदनी, टळतां सुख योगी. अ. २
उज्वल ध्याननी एकता, खेंची प्रभु आणे;
पुद्गळने दूरे करी, शुद्धरूप प्रमाणे. अ. ३
पिंडस्थादिक ध्यानथी, प्रभु दर्शन आपे;
बुद्धिसागर भक्तिथी, सत्य–आनंद व्यापे. अ. ४

---

५ सुमतिनाथस्तवन.

(राग उपरनो.)

सुमतिचरणमां लीनता, सातनयथी खरी छे;
समकित पामी ध्यानथी, योगियोए वरी छे. सुमति. १
नैगम संग्रह जाणजो, व्यवहार विचारो;
ऋजुसूत्र वर्तमानना, परिणामने धारो. सुमति. २
अनुक्रम चरण विचारने, नयो सप्त जणावे;
शब्द अर्थ नय चरणने, अनेकांत ग्रहावे. सुमति. ३
द्रव्य अने भाव भेदथी, चउ निक्षेप भेदे;
तुज चारित्रने धारतां, आठ कर्मने छेदे. सुमति. ४

अजर-अमर अरिहंत ! तुं, भेदभावने टाले;
बुद्धिसागर चरणथी, शिवमंदिर म्हाले. सुमति. ५

---

६ पद्मप्रभस्तवन.

(राग उपरनो.)

पद्मप्रभु ! जिनराज ! तुं, शुद्धचैतन्ययोगी;
क्षायिकचेतनऋद्धिनो, प्रभु ! तुं वड भोगी. पद्म. १
हरि हर ब्रह्मा तुं खरो, जडभावथी न्यारो;
अष्टऋद्धिभोक्ता सदा, भवपार उतारो. पद्म. २
नाम-रूपथी भिन्न तुं, गुण-पर्यायपात्र;
शुद्धरूप ओळखाववा, गुरु तुं-हुं छात्र. पद्म. ३
सत्ताथी सरखो प्रभु, शुद्ध करशो व्यक्ति;
बुद्धिसागर भावथी, प्रभुरूपनी भक्ति. पद्म. ४

---

७ सुपार्श्वनाथस्तवन.

(राग केदारो.)

श्रीसुपार्श्वजिनेश्वर प्यारो,
भवजलधिथी तारोरे;

स्थिरउपयोगे दिलमां धार्यो,
मोह–महामल्ल हार्योरे. श्री. १
मनमंदिरमां दीपकसरखो,
रुप जोइ जोइ हरखोरे;
षट्कारकनो दिव्य तुं चरखो,
परम प्रभुरुप परखोरे. श्री. २
क्षायिकगुणधारी–जयकारी,
शाश्वतशिवसुखकारीरे;
बुद्धिसागर चिद्घनसंगी,
जग जय जिन उपकारीरे. श्री. ३

---

८ चंद्रप्रभस्तवन.

(राग केदारो.)

चंद्रप्रभु जिनवर जयकारी,
हुं जाउं बलिहारी रे;
केवलज्ञान ने केवल दर्शन,
क्षायिकसमकितधारी रे. चं.

अष्टगुणो, आठकर्मने टाळी,
ध्याने प्रभु शिव वरिया रे;
भावकर्म राग-द्वेषने टाळी,
भवसागर झट तरिया रे. चं. २
शुभाशुभपरिणाम हठावी,
शुद्धपरिणामने धार्यो रे;
ध्यानवडे गुणठाणे चढतां,
मोह-मल्ल खूब हार्यो रे. चं. ३
चंद्रनी ज्योतिपेठे निर्मळ,
चेतनज्योति दीपे रे;
बुद्धिसागर चेतनज्योति,
सर्वज्योतिने जीपे रे. चं. ४

---

९ सुविधिनाथस्तवन.

(राग केदारो.)

सुविधिजिनेश्वर सुविधिधारी,
वरिया मुक्ति-नारी रे;

परपरिणामे बंध निवारी,
शुद्धदशा घट धारी रे. सु० १
यम–नियम–आसन जयकारी,
प्राणायाम अभ्यासे रे,
प्रत्याहार ने धारणा धारे,
चेतनशक्ति प्रकाशे रे. सु० २
ध्यान–समाधि ए योगनां अंगो,
पार लह्या जिनदेवा रे;
बुद्धिसागर सुविधिजिनेश्वर,–
सेवा मीठा मेवा रे. सु० ३

---

१० शीतलनाथस्तवन.

(राग केदारो.)

शीतलजिनपति ! यतिततिवंदित,
शीतलता करनारा रे;
अज–अविनाशी–शुद्ध–शिवशंकर !
प्राणथकी तुं प्यारा रे. शी० १

उपादान शीतलता समरे,
निमित्त सेवे साचुं रे;
समताथी क्षणमां छे मुक्ति,
शीतल रूपमां राचुं रे. शी० २
उपशम–क्षयोपशम ने क्षायिक,–
जावे समता सार रे;
ज्ञानानंदी समता साधो,
उतरशे जवपार रे. शी० ३
सहजानंदी शीतलचेतन,
अंतर्यामिदेव रे;
बुद्धिसागर शुद्धरमणता,
शीतलजिनपतिसेव रे. शी० ४

---

११ श्रेयांसनाथस्तवन.

(राग केदारो.)

श्रीश्रेयासजिनसाहिबसेवा,
शाश्वसाशिवसुखमेवा रे;

द्रव्यार्थिक–पर्यायार्थिकनय,
शुद्ध निरंजन देवा रे. श्री० १
योगी, भोगी, गतभय शोकी,
कर्माष्टकथी भिन्न रे;
शुद्धोपयोगी, स्वपरप्रकाशक,
क्षायिकनिजगुणलीन रे. श्री० २
अनंतगुण–पर्यायनी अस्ति,
समये समये अनंती रे;
परद्रव्यादिकनी नास्तिता,
समये अनंती वहंती रे. श्री० ३
अस्ति–नास्तिमय शुद्धस्वरूपी,
संग्रहनयथी अनादि रे;
व्यक्तपणुं शब्दादिकनयथी,
सर्व जीवोमां आदि रे. श्री० ४
अग्निथी जेम अग्नि प्रगटे,
शुद्ध चेतनथी शुद्ध रे;
बुद्धिसागर पुष्टालंबन,
उपादान–गुण बुद्ध रे. श्री० ५

१२ वासुपूज्यस्वामिस्तवन.

(राग केदारो.)

वासुपूज्यनी पूजा करतां,
पोते पूज्य ते थाय रे;
जिनवर-पूजा ते निजपूजा,
शुद्धविचारे सदाय रे. वा० १

निर्विकल्प-उपयोगे पूजा,
भाव-निक्षेपे सारी रे;
योग-असंख्ये पूजा भाखी,
तरतमयोग विचारी रे. वा० २

सालंबन पूजाथी मोटी,
निरालंबन भाखी रे;
रूपातीत पूजाथी मुक्ति,
छे बहुसूत्र त्यां साखी रे. वा० ३

अष्टप्रकारी आदि पूजा,
द्रव्यपूजा सुखकारी रे;
एकांतवादी-पूजन मिथ्या,
समजो सूत्र विचारो रे. वा

नय–निक्षेपे पूजा भेदो,
करशे ते सुख पामे रे;
बुद्धिसागर पूज्यपणुं लही,
ठरशे ध्रुवपदठामे रे. वा० ५

---

१३ विमलनाथस्तवन.

(श्री श्रेयांसजिन अंतर्यामी–ए राग.)

विमलजिनेश्वर चेतन गावो,
गावो बहु मन ध्यावो रे;
संग्रहनयथी निर्मळ चेतन,
शब्दादिकथी बनावो रे. वि. १
प्रतिप्रदेशे ज्ञान अनंतु,
छति सामर्थ्य–पर्याय रे;
क्षयोपशमथी–क्षायिकभावे,
लोकालोक जणाय रे; वि. २
असंख्यप्रदेशी–चिद्घनराया,
अनंतशक्ति विलासीरे;

आविर्भावे चेतनमुक्ति,
नासे सकल उदासी रे. त्रि. ३
अनंतगुणनी शुद्धक्रियानो,
समये समये जोगीरे;
बुद्धिसागर शुद्धक्रियाथी,
सिद्ध–सनातन–योगीरे. त्रि. ४

---

१४ अनंतनाथस्तवन.

(राग उपरनो.)

अनंतगुण–पर्यायनुं भाजन,
अनंतप्रभु मन ध्यावुंरे;
परपरिणमता दूर हठावी,
शुद्धरमणता पावुंरे. अ० १
ज्ञानस्वरुपी–ज्ञेयस्वरुपी,
परज्ञेयादिक भिन्नरे;
ज्ञेय अनंता, ज्ञान अनंतु,
ज्ञाता ज्ञानाभिन्नरे. अ० २

गुण अनंता समये समये,
व्ययोत्पत्तिता पावेरे;
द्रव्यरूप त्रणकालमां ध्रुव छे,
केवलज्ञानी गावेरे. अ० ३

अनंतगुणमां अस्ति—नास्तिता,
समये समये जाणोरे;
अस्ति—नास्तिथी सप्तभंगोनी,
उत्पत्ति चित्त आणोरे. अ० ४

एक समयमां सर्वभावने,
केवलज्ञानी जाणेरे;
सप्तभंगीथी धर्म प्रबोधे,
उपदेशक गुणठाणेरे. अ० ५

विशेष स्वभावे गुण अनंता,
भेद परस्पर पावेरे;
बुद्धिसागर जाणे तेना,
मनमां अनंतप्रभु आवेरे. अ० ६

---

१५ धर्मनाथस्तवन.

(राग उपरनो.)

धर्मजिनेश्वर परमकृपाळु,
वंदी भवत्रय टाळुंरे;
धर्मजिनेश्वरध्यान कर्याथी,
अन्तरमां अजवाळुंरे. ध० १

वस्तु-स्वभाव ते धर्म प्रकाशे,
केवलज्ञाने साचोरे;
नय-निक्षेपे धर्मने समजो,
शुद्धस्वरूपमां राचोरे. ध० २

धर्मादिक षड्द्रव्यने जाणे,
अनन्तगुण-पर्यायरे;
ज्ञेयोपादेयहेयना ज्ञाने,
वस्तु-धर्म परखायरे. ध० ३

चेतनता पुद्‌गलपरिणामी,
पुद्‌गल-कर्म करेछेरे;
चेतनता निजरूपपरिणामी,
कर्म-कलंक हरेछेरे. ध० ४

जड–पुद्गलथी न्यारो चेतन,
ज्ञानादिकगुण धारीरे;
बुद्धिसागर चेतन–धर्मे,
पामे सुख नरनारीरे. ध० ५

---

१६ शान्तिनाथस्तवन.

(राग केदारो.)

शान्तिजिनेश्वर अलख अरूपी,
अनन्तशान्तिस्वामीरे;
निराकार–साकार दो चेतना,
धारक छो निर्नामीरे. शान्ति० १
परमब्रह्मस्वरूपी, व्यापक,
ज्ञानथकी जिनरायारे;
व्यक्तिथी व्यापक नहि जिनजी,
प्रेमे प्रणमुं पायारे. शान्ति० २
आनंदघन–निर्मल प्रभुव्यक्ति,
चेतनशक्ति अनंतिरे;

स्थिरोपयोगे शुद्धरमणता,
शान्तिजिनवर–भक्तिरे. शान्ति० ४
कर्म खर्याथी साची शान्ति,
चेतनद्रव्यनी प्रगटेरे;
शान्ति सेवे पुद्गलथी झट,
चेतन–ऋद्धि वछूटेरे. शान्ति. ४
चउनिक्षेपे शान्ति समजी,
भाव–शान्ति घट धारोरे;
बुद्धिसागर शान्ति लहीने,
जल्दी चेतन तारोरे. शान्ति० ५

कुंथुनाथस्तवन.

(राग केदारो.)

कुंथुजिनेश्वर करुणानागर, भावदयाभंडाररे;
चिदानंदमय–चेतनमूर्ति, रुपातीत जयकाररे. कुं० १
त्रण भुवननो कर्त्ता ईश्वर, करता वादी पक्षरे;
सृष्टिकर्त्ता नहिं छे ईश्वर, समजावे जिन दक्षरे. कुं० २

निमित्तथी कर्त्ता ईश्वरमां, दोषो आवे अनेकरे;
विनाप्रयोजन जगनो कर्त्ता, होय न ईश्वर छेकरे. कुं० ३
सृष्टिकार्य तो हेतु उपादान, कोण ? कहो सुविचारीरे;
उपादान ईश्वरने माने, दोष अनेक छे त्यारीरे. कुं० ४
सृष्टिरूप ईश्वर ठरतां तो, जडरुप थयो इशरे;
आगमयुक्ति विचारे साचुं, समजो विश्वावीशरे. कुं० ५
परपुद्गलकर्त्ता नहि ईश्वर, सिद्ध-बुद्ध निर्धाररे;
स्वाभाविकनिजगुणना कर्त्ता, ईश्वर जग जयकाररे. कुं०
चेतन ईश्वर थावे सहेजे, ध्यान करी एकरूपरे;
बुद्धिसागर ईश्वर पूजो, चिदानंद-गुणभूपरे. कुं० ७

---

१८ अरनाथस्तवन.

(श्रीरे सिद्धाचळ भेटवा-ए राग.)

श्रीअरनाथजी वंदीए,
शुद्ध ज्ञान प्रकाशी;
जड-चेतनभेदज्ञानथी,
टळे सकल उदासी. श्री अ० १

संग्रहनय एकान्तथी,
एक सत्ता माने;
सर्व जीवनो आतमा,
एक दीस पिछाणे. श्री अ० २
व्यवहारनय विशेषथी,
व्यक्ति बहु देखे;
व्यक्ति विना सत्ता कदी,
कोइ नजरे न पेखे. श्री अ० ३
सामान्य ने विशेषनी,
एक द्रव्ये स्थिति;
व्यक्ति अनंता आतमा,
अनेकान्तनी रीति. श्री अ० ४
माया पुद्गल-भावथी,
छती शास्त्रे भाखी;
चैतन्य-भावे जाणजो,
माया अछती दाखी. श्री अ० ५
एकान्ते मिथ्या सदा,
नित्यादिकभावा,

बुद्धिसागर धर्म छे,
स्याद्वादस्वभावा. श्री अ० ६

---

१९ मल्लिनाथस्तवन.

(हे सुखकारी! आ संसारथकी जो मुजने
उद्धरे—ए राग.)

उपयोग धरी,
मल्लिजिनेश्वर प्रणमी शिवसुख धारीए;
तजी बाह्य—दशा,
शुद्धरमणतायोगे कर्म निवारीए.
प्रभु ! मुज सत्ता छे तुजसमी,
निर्मलव्यक्ति मुज चित्त रमी;
तें अशुद्ध—परिणति तुर्त दमी. उपयोग. १
निजभावरमणता रंगाउं,
अंतर्यामीप्रभुने गाशुं;
प्रभुव्यक्तिसमा अन्तर थाशुं. उपयोग० २
चेतनता निजमां रंगाशे,
प्रभु ! तुज मुज अंतर झट जाशे;

सहजानंदी चेतन थाशे. उपयोग. ३

प्रभु ! वस्तु-धर्म तन्मय थावुं,
मुज सत्ताधर्म प्रगट पावुं;
गुणठाणे गुण सहु निपजावुं. उपयोग. ४

प्रभुध्याने शुद्धदशा जागे,
वेगे जयडंको जग वागे;
बुद्धिसागर जिनवररागे. उपयोग. ५

---

२० मुनिसुव्रतस्वामीस्तवन.

(श्रीसंभवजिनराजजीरे, ताहरुं अकळ स्वरूप,
जिनवर पूजो-ए राग.)

मुनिसुव्रतजिन ! ताहरुंरे,
अलख-अगोचररूप, मनमांध्यावुं;
असंख्यप्रदेशी आतमारे,
परमेश्वर जगभूप. मन.
ध्यावुं ध्यावुंरे अनुभवयोगे,
शुद्धध्याने ध्येयस्वरूप. मन. १

द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावथीरे,
चेतनव्यक्ति शुद्ध, मन.
परद्रव्यादिकनास्तितारे,
क्षायिक-केवलबुद्ध. मन. २
सादि-अनंतिभंगथीरे,
पाम्या परमानंद, मन.
प्रदेशप्रदेशप्रति ज्ञानमांरे,
भासे ज्ञेय अनंत. मन. ३
परद्रव्य-पर्यायानंतनुंरे,
एक प्रदेश करे तोल, मन.
एक समयमां ज्ञानथीरे,
चेतन द्रव्य अमोल. मन. ४
परपुद्गल दूरे करीरे,
थया प्रभु ! कृतकृत्य, मन.
चेतनव्यक्ति समारवारे,
तुज आलंबन सत्य. मन. ५
त्रियोगे प्रभु ! आदर्योरे,
अनंतशक्ति नाथ ! मन.

एकमेक तुज ध्यानथोरे,
थइ झालुं तुज हाथ. मन. ६
अरुपी अरुपीने मळेरे,
साची जीवसगाइ, मन.
बुद्धिसागर जागियोरे,
आवी मुक्तिवधाइ. मन. ४

---

२१ नमिनाथस्तवन.

(थांपर वारी मारा साहिबा
काबोल मत जाजो—ए राग.)

नमिजिनवर नमुं भावथी, मारे मोंघा मोले;
धर्मादिद्रव्य—शक्तियो, एक गुणना न तोले. १
शुद्धध्यानमां आवीने, रगोरगमां वसियो;
धातोधात मळी खरी, लेश मात्र न खसियो. २
स्व स्व जाति मळी खरी, जड—जाव विदूरे;
ध्याता ध्येयना तानमां, सत्य—सुखडां स्फुरे. ३
अनुजव—ताळी लागतां, आनंद—खुमारी;
परमप्रभु—आदर्शमां, जोइ जाति में मारी. ४

शुद्धद्रव्य जेवुं ताहरुं, तेवुं मारुं दीठुं;
सत्ताए सरखा प्रभु, मन लाग्युं मीठुं. ५

तारुं ध्यान ते माहरुं, दोष मुजथी नासे;
शुद्धदशाना ध्यानमां, एकमेकता जासे. ६

एकमेकता योगमां, मनमंदिर आण्या;
ताएगा जाओ नहि व्यक्तिथी, पण ज्ञाने ताएया. ७

शुद्धज्ञेयाकारी ज्ञानथी, एकरूपे भळिया;
तुज सेवाकारव्यक्तिथी, वेगे दोषो टळिया. ८

निर्विकल्प–उपयोगथी, शुद्धरूपमां मळशुं;
बुद्धिसागर शिवमां, ज्योति ज्योतमां भळशुं. ९

---

२२ नेमिनाथस्तवन.

(राग उपरनो.)

राजुल कहे छे शामळा ! केम पाछा वळिया;
मुजने मूकी नाथजी, कोनाथी हळिया. १

पशुदया मनमां वसी, केम म्हारी न आणो;
स्त्रीने दुःखी करी प्रभु ! हठ फोगट ताणो. २

लग्न न करवां जो हतां, केम आंही आव्या;
पोतानी मरजीविना, केम बीजा लाव्या. २

ऋषभादिकतीर्थंकरा, गृहवासे वसिया;
तेनाथी शुं तमे ज्ञानी के, आवी दूरे खसिया. ४

शुकन जोतां न आवड्या, कहेवाता त्रिज्ञानी;
बनवानुं एम जो हतुं, वात पहेलां न जाणी. ५

जादवकुळनी रीतडी, वोल बोली न पाळे;
आरंभी पडतूं मूके, ते शुं ? अजुवाळे. ६

काळा कामणगारडा, भीरु थइ शुं ? बळिया;
हुकमथी पशुआं दया, आण मानत बळिया. ७

विरागी जो मन हतुं, केम तोरण आव्या;
आठभवोनी प्रीतडी, लेश मनमां न लाव्या. ८

मारी दया करी नहि जरा, केम अन्यनी करशो;
निर्दय थइने वाल्हमा, केम ठामे ठरशो. ९

विरहव्यथानी अग्निमां, बळती मने मूकी;
काळाथी करी प्रीतडी, अरे पोते हुं चूकी. १०

जगमां कोइ न कोइनुं, एम राजुल धारे;
रागिणी थइ वैरागिणी, मन एम विचारे. ११

संकेत करवा प्यारीने, प्राणपति ! अहिं आव्या;
हरिणदयाथी बहु दया, प्रभु ! मुज पर लाव्या. १२
भवनां लग्न निवारवा, ज्ञान मुक्तिथी आणी;
आंखे आंख मिलावीने, मने मुक्तिमां ताणी. १३
हुं भोळी समजी नहीं, साची जगमां अबळा;
नाथे नेह निभावियो, धन्य स्वामी सबळा. १४
भोगावलीना जोरथी, गृहवासमां फसिया;
ऋषभादिकतीर्थंकरा, ललनासंगरसिया, १५
भोगावलीना अभावथी, मारो संग न कीधो;
ब्रह्मचारी मारा स्वामिजी, जश जगमां लीधो. १६
स्त्रीने चेतावा आविया, स्वामी उपकारी;
आठ भवोनी प्रीतडी, पूरी पाळी सारी. १७
हाथोहाथ न मेळव्यो, स्वामी गुणरागी;
स्वामीना ए कृत्यथी, हुं थइ वैरागी. १८
त्रिज्ञानीना कार्यमां, कांइ आवे न खामी;
राजुल वैरागण बनी, शुद्ध-चेतना पामी, १९

झूठां सगपण–मोहथी, मोहनी ए माया;
भ्रांतिथी जगजीवडा, नाहक ललचाया. २०
नर के नारी हुं नही, पुद्गलथी हुं न्यारी;
पुद्गल–कायाखेलमां, शुद्ध–बुद्धता हारी. २१
नामरूपथी भिन्न हुं, एक चेतन जाति;
क्षात्रियाणी व्यवहारथी, कोइ मारी न ज्ञाति. २२
अनंतकाळथी आथडी, संसारमां दुःखी;
विषयविकारो सेवतां, कोइ थाय न सुखी. २३
जडसंगे परतंत्रता, मोह–वैरीए ताणी;
उपकारी साचा प्रभु ! सत्यपंथमां आणी. २४
वनी वैरागण नेमिनी,–पासे झट आवी;
उपकारी स्वामी कर्या, संयमलय लावी. २५
शोभा सतीनी मोटकी, जग राजुल पामी;
रहनेमिने बोधथी, थइ गुणविश्रामी. २६
एक टेकी थइ राजुले, भाव–स्वामी कीधा;
अद्भुतचारित्र धारीने, जगमां जश लीधा. २७
साची भक्ति स्वामीनी, अंतरमां उतारी;
नवरस–रंगे झीलती, लहे सुख खुमारी. २८

चेतन–चेतनाभावथी, एक संगे मळियां;
क्षपकश्रेणी–निस्सरणीथी, शिवमंदिर भळियां. २९
कर्म–कटक संहारीने, नेम–राजुलनारी;
शिवपुरमां सुखिया थयां, वंदु वार हजारी. ३०
शुद्धचेतनसंगमां, शुद्धचेतना रहेशे,
बुद्धिसागर भक्तिथी, शाश्वतसुख लहेशे. ३१

---

२३ पार्श्वनाथस्तवन.

(राग उपरनो.)

पार्श्वप्रभु प्रभुतामयी, मारे मोटुं शरणुं;
मेरु अवलंबी कहो, कोण झाले तरणुं. १
भावचिंतामणि तुं प्रभु ! शाश्वतसुख आपे;
चउ निक्षेपे ध्यावतां, भवना दुःख कापे. २
तारुं मारुं आंतरु, एकलीनता टाळे;
सादि–अनंतिसंगथी, दुःख कोइ न काळे. ३
शुद्धदशापरिणामथी, निशदिन तुज भेटुं;
शुद्धदृष्टिथी देखतां, लेश लागे न छेटुं. ४

तुज मुज अंतर भागशे, संयमगुणयुक्ति;
क्षेत्रभेदने टाळीने, सुख लहिशुं मुक्ति. ५
मुक्तिमां मळशुं प्रभु, एम निश्चय धार्यो;
ध्याने रंगवधामणां, मोह–भाव विसार्यो. ६
तुज संगी थइ चेतना, शुद्धवीर्य उल्लासी;
बुद्धिसागर जागियो, चेतन विश्वासी. ७

---

२४ महावीरस्वामीस्तवन.

(राग उपरनो.)

त्रिशलानंदन ! वीरजी ! मनमंदिर आवो;
भाव–वीरता माहरी, प्रभु ! प्रेमे जगावो. १
भाव–वीर संचारथी, प्रभु ! मोह न आवे;
द्रव्य–वीर संचारमां, मोहनुं जोर फावे. २
चार निक्षेपे ध्याइए, भाव–वीर्यना धारी;
समकितगुणठाणाथकी, प्रभो ! तुं संचारी. ३
भाव–वीर्य प्रगटाववा, आलंबन साचुं;
क्षयोपशम–क्षायिकमां, मन मारुं राच्युं. ४

क्षयोपशमे ते हेतु छे, क्षायिकगुणकाज;
क्षायिक-वीर्यता आपोने, राखो मुज लाज. ५
असंख्यप्रदेशे क्षायिक, भाव-वीर्य अनंत;
योग-ध्रुवता धारीने, लहे वीर्यने संत. ६
मति-संगी पुद्गलविषे, जे वीर्य कहातुं;
योगतणी ध्रुवताथकी, ध्याने लेश न जातुं. ७
भाव-वीर ! प्रभु आतमा, अंतर् गुणभोगी;
लघुता एकता लीनता, साधनथी योगी. ८
भाव-वीर्य निजमां जळ्युं, वाग्युं जितनगारुं;
फरक्यो विजयनो वावटो, क्षायिकसुख सारुं. ९
आनंदमंगल जीवमां, ज्ञान-दिनमणि प्रगटयो;
दर्शन-चंद्र प्रकाशियो, तब मोहज विघटयो. १०
अनंतगुण-पर्यायनो, जीव भोगी सवायो;
बुद्धिसागर मंदिरे, चेतन झट आयो. ११



कलश.

(ओछव रंग वधामणां, प्रभुपासने नामे--ए राग.)

चोवीश जिनवर भक्तिथी, गाया गुण रागे;
गाशे ध्याशे जे प्रभु, ते अन्तर जागे. १

अन्तरना उद्योतथी, होय मंगळमाळा;
मनमंदिर प्रभु आवतां, टळे मोहना चाळा. २

जिनभक्ति निजरूप छे, चेतन उपयोगी;
अनंतगुण--पर्यायनो, समये होय भोगी. ३

झळहळ ज्ञाननी ज्योतिमां, जड--चेतन भासे;
चेतन परमेष्ठी सदा, एम ज्ञानी प्रकाशे. ४

चेतननी शुद्धभक्तिथी, शुद्धचेतन परखुं;
अनेकान्तनय-दृष्टिथी, प्रभु गाइने हरखुं. ५

संवत ओगणोस चोसठे, पुनम दिन सारो;
अषाड शुकल पक्षमां, गाम माणसा धारो. ६

सोमवार चढता दिने, चोवीस जिन गाया;
अन्तरना उपयोगथी, सत्य--आनंद पाया. ७

सुखसागरगुरु प्रेमथी, बुद्धिसागर गावे;
गाशे ध्यावशे जे भवी, ते शिवसुख पावे. ८

जिनेश्वरस्तवन चतुर्विंशातिका.

(२)

---

१ ऋषभदेवस्तवन.

(प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए--ए राग.)

ऋषभजिनेश्वर ! वंदना,
होशो वारंवार;
पुरुषोत्तम भगवान निराकार संत छो,
गुणपर्यायआधार. ए टेक.
उत्पत्ति--व्यय ध्रुवता,
एक समयमां हि जोय;
पर्यायार्थिकनयथी व्यय–उत्पत्ति छे,
द्रव्यथकी ध्रुव होय. ऋ. १
सत् करतां सामर्थ्यना,
होय पर्याय अनन्त;
अगुरुलघुनी शक्ति ते तेहमां जाणीए,
अनन्त शक्ति स्वतंत्र. ऋ० २

परमभाव ग्राहक प्रभु,
तेम सामान्य विशेष;
ज्ञेय अनन्तनुं तोल करे प्रभु ! ताहरो,
क्षायिक एक प्रदेश. ऋ० ३

स्थिरता क्षायिकभावथी,
मुखथी कही नहि जाय;
अनन्तगुण निज कार्य करे लही शक्तिने,
उत्पत्ति--व्यय पाय. ऋ० ४

गुण अनन्तनी ध्रुवता,
द्रव्यपणे छे अनादि;
गुणनी शुद्धि अपेक्षी पर्याये करी,
भंगनी स्थिति छे सादि. ऋ० ५

सादि अनंति मुक्तिमां,
सुख विलसोछो अनंत;
सुख ज्ञेयादिक ज्ञानमां ज्ञाता जगगुरु,
ज्ञान अनंत वहंत. ऋ० ६

रागद्वेष—युगल हणी,
थइया जग महादेव;

बुद्धिसागर अवसर पामी भक्तिथी,
पामे अमृतमेव. ऋ० ७

---

२ अजितनाथस्तवन.

(श्री संभवजिन ! ताहरुंरे, अलख
अगोचर रूप–ए राग.)

अजित जिनेश्वर सेवनारे,
करतां पाप पलाय;
जिनवर सेवो. सेवो सेवोरे,
भविकजन ! सेवो,
प्रभु शिवसुखदायक मेवो,
प्रभु सेवे सिद्धि सुहाय. जिनवर.
मिथ्या–मोह निवारीनेरे,
क्षायिक–रत्न ग्रहाय; जिनवर.
चरित्र–मोह हठावतांरे,
स्थिरता क्षायिक थाय. जिनवर. १
क्षपक–श्रेणि आरोहीनेरे,
शुक्ल–ध्यानप्रयोग. जिनवर.

ज्ञानवरणीयादिक हणीरे,
क्षायिक नवगुण—भोग. जिनवर. २
अष्टकर्मना नाशथीरे,
गुण—अष्टक प्रगटाय; जिनवर.
एक समय समश्रेणिएरे,
मुक्तिस्थान सुहाय. जिनवर. ३
नात्यंताभाव मुक्तिनोरे,
जडिममयी नहि खास; जिनवर.
व्योमपरे नहि व्यापिनोरे,
नहि व्यावृत्ति—विलास. जिनवर. ४
सादि अनंत स्थितिथीरे,
सिद्ध बुद्ध भगवंत; जिनवर.
झळहळ ज्योति ज्यां जगमगेरे,
ज्ञेयतणो नहि अंत. जिनवर. ५
परज्ञेय ध्रुवता त्रिकालमांरे,
उत्पत्ति—व्ययसाथ; जिनवर.
निजज्ञेय ध्रुवता अनन्तनोरे,
पर्यायसह शिवनाथ. जिनवर. ६

परजाणे परमां न परिणमेरे,
अशुद्धभाव व्यतीत; जिनवर.
बुद्धिसागर ध्यानथीरे,
थावे ध्यानो अजित. जिनवर. ४

---

३ संभवनाथस्तवन.

(देखो गति दैवनीरे—ए राग.)

संभवजिन ! तारशोरे,
तारशो त्रिभुवननाथ ! संभवजिन ! तारशोरे.
निमित्तना पुष्टालंबनेरे,
साध्यनी सिद्धि कराय;
उपादाननी शुद्धतारे,
निमित्तविना नहि थाय. संभव. १
द्रव्य क्षेत्र काल भावथीरे,
निमित्त बहु भेद;
ज्ञान दर्शन चारित्रनारे,
निमित्त टाळे खेद. संभव. २

शुद्धदेवगुरु हेतु छेरे,
उपादान करे शुद्धि;
उपादान अभिन्न छेरे,
कार्यथी जाणो बुद्ध. संभव. ३
कार्य द्रव्यथी भिन्न छेरे,
निमित्त हेतु व्यवहार;
शुद्धादिक षट् भेद छेरे,
व्यवहार नयना धार. संभव. ४
भिन्न निमित्त पण कार्यमांरे,
उपादान करे पुष्टि;
निमित्तवण उपादानथीरे,
थाय न साध्यनी सृष्टि. संभव. ५
पुष्टालंबन जिनविभुरे,
आदर्यो मन धरी भाव;
उपादाननी शुद्धिमांरे,
बनशे शुद्ध बनाव. संभव. ६
त्रिकरणयोगथी आदर्योरे,
मन धरो साध्यनी दृष्टि;

बुद्धिसागर सुख लहेरे,
पामी अनुभव-सृष्टि. संभव. ७

---

४ अभिनंदनस्तवन.

(पद्मप्रभु ! तुज मुज आंतरं—ए राग.)

अभिनन्दनजिनरूपने,
ध्यानमां स्मरणथी लावुंरे;
ध्यानमां लीनतायोगथी,
सुख अनन्त घट पावुंरे. अभि. १

मन-वच-कायाना योगनो,
स्थिरता जेह प्रमाणरे;
तदनुगत वीर्यता उल्लसे,
भाव क्षयोपशम सुखखाणरे. अभि. २

असंख्यप्रदेशमयी व्यक्तिमां,
ध्यानथी एकता थायरे;
पंडित-वीर्य त्यां संपजे,
उज्ज्वल अध्यवसायरे. अभि. ३

क्षणक्षण उज्ज्वल ध्यानमां,
प्रगटतां सहज आनन्दरे;
बाह्य जड विषयना सुखनो,
वेगथी नासतो फन्दरे. अभि. ४

अन्तरशुद्धपरिणतिथकी,
भावथी होय निज मुक्तिरे;
शुद्धनयस्थापना सहजथी,
प्रगटतो ए तत्त्वनी युक्तिरे. अभि० ५

क्षयोपशम ज्ञान-वीर्यथी,
क्षायिक--धर्म ग्रहायरे;
निर्विकल्पउपयोगमां,
श्रुतज्ञान एक स्थिर थायरे. अभि० ६

भावश्रुतज्ञानआलंबने,
जीव ते जिनरूप थायरे;
बुद्धिसागर शिवसंपदा,
मंगल श्रेणि पमायरे. अभि० ७

---

५ सुमतिनाथस्तवन.

(विरति ए सुमति धरी आदरो-ए राग.)

सुमतिजिनेश्वर शुद्धता,
बुद्धता परम स्वभावरे;
अस्तिता नास्तिता एकता,
ज्ञातृता नहि परभावरे. सुमति॰ १

भिन्न अभिन्नता नित्यता,
तेम अनित्य पर्यायरे;
एक समयमांहि संपजे,
पर्याय उपजे विलायरे. सुमति॰ २

अगुरुलघु पर्यायनी,
शक्ति अनन्ती सदायरे;
परिणमे असंख्यप्रदेशमां,
कारक षट् उपजायरे. सुमति॰ ३

आदि अनादि षट्कारको,
व्यक्तिपणे एकेक प्रदेशरे;
अनादि अनन्त स्थिति शक्तिथी,
कारकषट् लहो बेशरे. सुमति॰ ४

एक अनेकता वस्तुमां,
नित्य अनित्यता धाररे;
समय सापेक्ष विचारतां,
होय अनेकान्त विस्ताररे. सुमति० ५

सदसत् कथ्य अकथ्य छे,
जिनवर धर्म अनन्तरे;
ज्ञानमां ज्ञेयनो भासना,
जाणे एक समय भदन्तरे. सुमति० ६

सम्यग्ज्ञानप्रभावथी,
प्रभु ! तुज रूप जणायरे;
चार प्रमाण ने भंगथी,
धर्म अनेक परखायरे. सुमति० ७

मन-वच-कायअतीत तुं,
आद्यों योगथी साररे;
तुज मुज एकता संपजे,
बुद्धिसागर निर्धाररे. सुमति० ८

---

६ पद्मप्रभस्तवन.

(विरति ए सुमति धरी आदरो—ए राग.)

पद्मप्रभु अलख निरंजन,
सिद्धना आठ गुणधारीरे;
साकार उपयोगे चेतना,
निराकार जयकारीरे. पद्म० १

अजर अमर अगोचर विभु,
नाम न रूप न जातिरे;
जगगुरु जय श्रीचिंतामणि,
त्रणभुवनमांहि ख्यातिरे. पद्म० २

उपमातीत परमातमा,
अनुभवविण न जणायरे,
दिशि देखाडी आगम रहे,
अनुभवे प्रभु परखायरे. प० ३

सद्गुरु—तीर्थउपासना,
स्याद्वाद सूत्रनो बोधरे;
परंपर गुरुगम जोडतां,
करे भवी जिनवरशोधरे. प० ४

ज्ञानना मानमां ध्यान छे,
ध्यानथी होय समाधिरे;
परम प्रभु एक तानमां,
भेटतां जाय उपाधिरे. प० ५
अनुभव–अमृत स्वादता,
चित्त अन्यत्र न जायरे;
चकोर जेम चंद्र तेम राचतुं,
परम प्रभुरूपमांहारे. प० ६
सुख अनंतनी राशिमां,
जीवनमुक्तपद पायरे;
बाह्यनां सुख रुचे नहि,
निश्चयसुख निजमांहारे. प० ७
परपरिणतिरंग परिहरो,
शुद्ध परिणतिमांहि रंगरे;
बुद्धिसागर जिनदर्शन,
देखवा प्रेम अभंगरे. प० ८



७ सुपार्श्वनाथस्तवन.

(नदी यमुनाके तीर—ए राग.)

सुपार्श्वप्रभु ! जिनराज ! कृपालु तारशो,
दीनतणी मुज प्रेम धरीने स्वीकारशो;
राग द्वेष अन्याय नृपति जोर टाळशो,
शुद्धरमणता सन्मुख दृष्टि वाळशो. १

विषयवासनापाशथी प्रभुजी ! छोडावजो,
परमदयालु ! देव ! दया दील लावजो;
अनुभव—अन्तरदृष्टिनी सृष्टि जगावजो,
परमानन्दनुं पात्र चेतन मुज थावजो. २

केवलज्ञाननी ज्योतिमां ज्ञेय अभिन्न छे,
परद्रव्यादिक ज्ञेयथकी वळी भिन्न छे;
ज्ञेयापेक्षे ज्ञान परिणमे जाणजो,
भिन्नाभिन्नस्वरूप अनेकांत आणजो. ३

ज्ञेयापेक्षे ज्ञान अनन्तुं जिन कहे,
ज्ञेयनी पासे ज्ञान गयावण सहु लहे;
दर्पण क्यांइ न जाय दर्पणमां समाय छे,
ज्ञेयाकारी भावो ए दृष्टांत न्याय छे. ४

दूरवर्ती जे ज्ञेय ज्ञानमांहि भासतो,
ज्ञान अचिन्त्यस्वभाव हृदयमां आवतो;
ज्ञेयविना सहु ज्ञाननी शून्यता जाणीए,
षड् द्रव्यो पर्याय अनन्त मन आणीए. ५

अस्तिविना न निषेध घटे कोइ द्रव्यनो,
द्वि वण नहि अद्वैत निषेध केम सर्वनो;
द्वैतनुं ज्ञान थया वण अद्वैत शुं कहो,
भासे ज्ञानमां द्वैत सत्यभाव सद्दहो. ६

द्रव्य अने पर्यायथी ज्ञेय अनन्तता,
वस्तुधर्म स्याद्वाद त्यां एकानेकता;
ध्रुवता ज्ञेयना द्रव्यपणे नित्यता खरी,
उत्पत्ति–व्यय ज्ञेयअनित्यता अनुसरी. ७

जीवद्रव्य एकव्यक्ति अनादि–अनंत छे,
गुण–पर्यवआधार चेतनजी सन्त छे;
बुद्धिसागर जिनवरवाणी सद्दहे,
समकित–श्रद्धायोगे अपेक्षा सहु लहे. ८

८ चंद्रप्रभुस्तवन.

(ए अब शोभा सारी हो मल्लिजिन—ए राग.)

चंद्रप्रभु ! पद राचुं हो चिद्‌घन !
चंद्रप्रभु ! पद राचुं;
मन मान्युं ए साचुं हो चिद्‌घन !
चंद्रप्रभु ! पद साचुं.
शुद्ध अखंड अनन्त गुण—लक्ष्मी,
तेना प्रभु ! तमे दरिया;
सत्ताए ज्ञानादिक लक्ष्मी,
व्यक्तिपणे तमे वरिया हो' चि. १
अनाद्यनन्तने, ने आदि—अनन्त,
सत्ता—व्यक्ति सुहाया;
अस्तिनास्तिमय धर्म अनन्ता,
समय समयमां पाया हो' चि. २
क्षपकश्रेणिये उज्जवलध्याने,
घातक कर्म खपाव्यां;
दग्धरज्जुवत् कर्म अघाती,

तेरमे चउदमे नसाव्यां हो' चि. ३

केवलज्ञाने ज्ञेय अनन्ता,
समय समय प्रभु ! जाणो;
अव्याबाध अनन्तु वीर्य,
समय समय प्रभु ! माणो हो' चि. ४

ऋद्धि तमारी तेवीज मारी,
कदिय न मुजथी न्यारी;
चंद्रप्रभु आदर्श-निहाळी,
आत्मिकऋद्धि संभारी हो' चि. ५

निज स्वजातीय सिंह निहाळी,
अजवृन्दगतहरि चेत्यो;
निज स्वजातीय सिद्ध संभारी,
जीव स्वपदमां वहेतो हो' चि. ६

अन्तर-दृष्टि अनुभव-योगे,
जागो निजपद रहियो;
बुद्धिसागर परम महोदय,
शाश्वतलक्ष्मी लहियो हो' चि. ७



९ सुविधिनाथस्तवन.

(नदी यमुनाके तीर–ए राग.)

सुविधिजिनेश्वर ! देव ! दया दीनपर करो,
करुणावंत महंत विनति ए दील धरो;
भवसागरनी पार उतारो कर ग्रही,
शक्ति अनन्तना स्वामी कहावोछो सही. १

तमनो शो छे जार कहो रवि आगळे,
कीडीनो शो भार के कुंजरने गळे;
कर्मतणो शो भार प्रभुजी ! तुम छते,
सिंहतणो शो भार अष्टापद त्यां जते. २

शुं खद्योतनुं तेज रवि ज्यां झळहळे,
तेम शुं मोहनुं जोर के उपयोग नीकळे;
ससलानुं शुं जोर सिंहआगळ अहो !
अनेकांत ज्यां ज्योति एकांतनुं शुं कहो. ३

परमप्रभु वीतराग राग त्यां शुं करे,
देखी इन्द्रनी शक्ति के सुर सहु करगरे;
प्राणजीवन वीतराग हृदयमां मुज वस्या,
ते देखी मोहयोध के सहु दूरे खस्या. ४

गुण–पर्यायाधार ! स्मरण त्हारुं खरुं,
ध्यान–समाधियोगे अलख निजपद वरुं;
परमब्रह्म ! जगदीश्वर ! जय जिनराजजी !
शरणे आव्यो सेवक राखो लाजजो. ५

वार वार शो ? विनति जाणो सहु कह्युं,
वार लगाडो न लेश दुःख में बहु सह्युं;
बुद्धिसागर सत्य भक्तिथी उद्धारजो,
वन्दन वार हजार विनति ए स्वीकारजो.

---

१० शीतलनाथस्तवन.

प्रीतलडी बंधाणीरे शीतल जिणंदशुं,
प्रभुविना क्षणमात्र नहि सोहायजो;
प्रेमीविना नहि बीजो ते जाणी शके,
रूप प्रभुनुं देखी मन हरखायजो. प्रीतलडी. १

अन्तरना उपयोगे प्रभुजी दिल वस्या,
भक्ति आधीन प्रभुजी प्राण सनाथजो;
अनुभवयोगे रंग मजीठनो लागियो,
त्रणभुवनना स्वामी आव्या हाथजो. प्रीतलडी. २

जेम प्रभुना दर्शनमां स्थिरता थती,
तेम प्रभुजी आनन्द आपे बेशजो;
आनन्ददाता—भोक्तानी थइ एकता,
चढी खुमारी यादी आपे हमेशजो. प्रीतलडी. ३
आत्माऽसंख्य प्रदेशे शीतलता खरी,
अवधूत योगी प्रगटावे सुखकंदजो;
औदयिकभाव निवारी उपशमआदिथी;
टाळे सघळा मोहतणा महाफंदजो. प्रीतलडी. ४
गुणस्थानक—निःसरणि चढतो आतमा,
उज्ज्वलयोगे पामे शिवपुर म्हेलजो;
क्षायिकभावे सुख अनंतुं भोगवे,
निजपदध्रुवता धारी करतो स्हेलजो. प्रीतलडी. ५
बाह्य—भावनी सर्व उपाधि नासतां,
प्रभुविरहनो नाश थशे निर्धारजो;
अनुभवयोगे रंगायो जिनरूपमां,
थाशुं प्रभुसमा अन्ते जयकारजो. प्रीतलडी. ६
निजगुणस्थिरतामां रंगावुं सहजथी,
वस्तुधर्म—ज्ञानादिक तुं आधारजो;

बुद्धिसागर अनुभव-वाजां वागीयां,
भेटया शीतलजिनवर जग जयकारजो. प्रीतलडो ७

---

११ श्रेयांसनाथस्तवन.

(श्री वीरप्रभु ! चरम-ए राग)

श्रेयांसप्रभु ! अन्तर्यामी क्षायिक-नवलब्धिधणी;
त्राता ध्राता, परोपकारी निर्भय योगी दिनमणि.
प्रभु शुद्धस्वरूप त्हारुं जेवुं,
प्रभु! शुद्ध स्वरूप म्हारुं तेवुं,
उज्ज्वलध्याने खेंची लेवुं, श्रेयांस १
प्रभु ! नाम-रूपथी भिन्न खरो,
प्रभु अनन्तसुखनो नव्य झरो,
में स्थिरउपयोगे दोल धर्यो. श्रेयांस. २
उत्पत्ति-व्यय-ध्रुवताभोगी.
योगातीत पण निर्मलयोगी,
कर्मातीतथी तुं नीरोगी, श्रेयांस. ४
ध्याने प्रभुनी पासे जावुं,
साधनथी साध्यपणुं पावुं,

ज्ञानादर्शे प्रभु घट लावुं, श्रेयांस. ४

प्रभु ! दर्शन देजो शिवरसिया,
प्रभु प्रेमे म्हारा दिल वसिया,
स्थिरउपयोगे जिन उल्लासिया, श्रेयांस. ५

प्रभु ! परममहोदय पद आपो,
प्रभु ! जिनपदमां मुजने थापो.
कर्यां कर्म अनादि सहु कापो. श्रेयांस. ६

प्रभु ! उपादान योगे आवो,
व्यक्तिथी निज गुण विरचावो,
बुद्धिसागर मळियो ल्हावो. श्रेयांस. ७

१२ वासुपूज्यस्तवन.

(गिरुआरे गुण तुमतणा—ए राग.)

वासुपूज्य ! त्रिभुवनधणी,
परमानन्दविलासीरे;
अकळकळा निर्भय प्रभु,
ध्याने नासे उदासीरे. वासुपूज्य. १

जगजीवन जगनाथ छो,
परमब्रह्म महादेवारे;

व्यापक ज्ञानथी विष्णु छो,
सुरपति करे पदसेवारे. वासुपूज्य. २
आदि–अनन्त तुं व्यक्तिथी,
एवंभूतथी योगीरे;
अनाद्यनन्त सत्तापणे,
गुणपर्यवनो भोगीरे. वासुपूज्य. ३
व्याप्य व्यापकता अभेदता,
ज्ञाताज्ञेय अभेदीरे;
भिन्नाभिन्न स्वभाव छे,
वेदरहित पण वेदीरे. वासुपूज्य. ४
परम महोदय चिन्मणि,
अजरामर अविनाशीरे;
नित्य निरंजन सुरमयी,
व्यक्तिशुद्ध प्रकाशीरे. वासुपूज्य. ५
निरक्षर अक्षर विभु,
जगबंधव जगत्रातारे;
क्षायिक नवलब्धिधणी,

ज्ञेय अनन्तना ज्ञातारे. वासुपूज्य. ६
पुरुषोत्तम पुराण तुं,
तुज ध्याने सुख लहीशुंरे;
बुद्धिसागर शुद्धता,
पामी जिनपद रहीशुंरे. वासुपूज्य. ७

---

१३ विमलनाथस्तवन.

(ज्यां लगे आतम तत्त्वनुं–ए राग.)

विमलजिनचरणनी सेवना,
शुद्धभावे करशुं;
अन्तर ज्योति झळहळे,
शिवस्थानक ठरशुं. विमल. १
पुद्गल भावना खेलथी,
चित्तवृत्ति हठावुं;
परमानन्दनी मोजमां,
निर्मल पद पावुं. विमल. २
अन्तर रमणता आदरी,
ध्रुवता निज वरशुं;

मनमोहन जगनाथना,
उपयोगथी तरशुं. विमल. ३
असंख्यप्रदेशी आतमा,
नित्यानित्य विलासी;
स्याद्वादसत्तामयी सदा,
जोतां टळती उदासी. विमल. ४
पुद्गल–ममता त्यागीने,
अन्तरमां रहीशुं;
अनुभवअमृत स्वादथी,
अक्षयसुख लहीशुं. विमल. ५
काया–वाणी–मनथकी,
विमलेश्वर न्यारो;
शुद्ध परिणतिभक्तिथी,
भेटीशुं प्रभु प्यारो. विमल. ६
स्थिर उपयोग प्रभावथी,
एकधातथी मळशुं;
बुद्धिसागर भक्तिथी,
ज्योति ज्योतमां मळशुं. विमल. ७

१४ अनंतनाथस्तवन.

(शांतिजिन ! एक मुज–ए राग.)

अनन्त जिनेश्वर नाथने,
वन्दतां पाप पलायरे;
रवि आगळ तम शुं ? रहे,
प्रभु भजे मोह विलायरे. अनन्त १

अनन्त गुणपर्यायपात्र तुं,
व्यक्ति एवंभूत साररे;
संग्रहनय परिपूर्णता,
ध्याता ते व्यक्तिथी धाररे. अनन्त. २

उपशम भाव क्षयोपशमथी,
साध्यनी सिद्धि करायरे;
धर्म निज वस्तुस्वभावमां,
स्थिर उपयोग सुहायरे. अनन्त. ३

ज्ञानदर्शनचरण–गुणविना,
व्यवहार कुलआचाररे;
साध्यलक्ष्ये शुद्ध चेतना,
जाणवो शुद्धव्यवहाररे. अनन्त. ४

द्रव्य क्षेत्र काल भावथी,
पर्याय द्रव्य अनन्तरे;
शुद्ध आलंबन आदरी,
व्यक्तिथी थाय भदंतरे. अनन्त. ५

स्वकीय द्रव्यादिकभावथी,
अनंतता अस्तिपणे साररे;
पर द्रव्यादिक अस्तिनो,
नास्तितता अनन्त विचाररे. अनन्त ६

वीर्य अनन्त सामर्थ्यथी,
उत्पाद-व्यय प्रतिद्रव्यरे;
छति पर्यायथी ध्रुवता,
समय समयमांहि भव्यरे. अनन्त. ७

धर्म अनन्तनो स्वामी तुं,
ध्यानमां ध्येयस्वरूपरे;
बुद्धिसागर निज द्रव्यनी,
शुद्धि ते जय! जिनभूपरे. अनन्त. ८

१५ धर्मनाथस्तवन.

(धर्मजिनेश्वर गाउं रंगशुं—ए राग)

धर्मजिनेश्वर वंदु भावथी,
वस्तुधर्मदार; जगत्मां.
वस्तुस्वभाव ते धर्म जणावता,
षड्द्रव्योमांहि सार. जगत्मां. १
ज्ञेय हेय आदेय जणावता,
सकल द्रव्य छेरे ज्ञेय; जगत्मां.
उपादेय चेतननो धर्म छे,
पुद्गलआदिरे हेय. जगत्मां. २
भावकर्म ते राग द्वेष छे,
काल अनादिथी जाण; जगत्मां.
द्रव्यकर्मनुं कारण तेह छे,
नोकर्म निमित्त आण. जगत्मां. ३
अशुद्धपरिणतियोगे बंध छे,
शुद्धपरिणतिथी वे मुक्ति; जगत्मां.
अन्तरचेतनसन्मुख योगथी,
शुद्ध उपयोगनी युक्ति. जगत्मां. ४

कर्त्ता-हर्ता चेतन कर्मनो,
बाह्िर-अन्तर योग; जगत्मां.
आत्मस्वभावे रमणता आदरे,
प्रगटे शिवसुखभोग. जगत्मां. ५
सुख अनन्तनी लीला ध्यानमां,
चेतन अनुभव पाय; जगत्मां.
ध्रुवयोगतणी स्थिरता होवे,
वीर्य अनन्त प्रगटाय. जगत्मां. ६
सविकल्पसमाधि शुभउपयोगमां,
ध्याता ध्येयनो भेद; जगत्मां.
शुद्धउपयोगे शुद्धसमाधिमां,
टळतो विकल्पनो खेद. जगत्मां. ७
अन्तरमां उतरीने पारखो,
निर्मल सुखनोरे नाथ; जगत्मां.
बुद्धिसागर समता एकता,
लीनता योगे सनाथ. जगत्मां. ८

---

१६ शान्तिनाथस्तवन.

(साहिब सांभळोरे संभव–ए राग.)

शान्तिनाथजीरे ! शान्ति साची आपो;
उपाधि हरीरे, निज पदमां निज थापो. शान्ति. १
शान्ति केम लहुंरे, तेनो मार्ग बतावो;
विनति माहरीरे, स्वामी दीलमां लावो. शान्ति. २
शान्ति प्रभु कहेरे, धन्य ! तुं जगमां प्राणी;
शान्ति पामवारे, मनमां उलट आणी. शान्ति. ३
जड ते जडपणेरे, चेतन ज्ञानस्वभावे;
भेदज्ञानना योगथीरे, समकित–श्रद्धा थावे. शान्ति.४
सद्गुरु परंपरारे, आगमना आधारे;
उपशमभावथीरे, शान्ति घटमां धारे. शान्ति. ५
साधु संगतेरे, पामी ज्ञाननी शक्ति;
समतायोगथीरे, प्रगटे शान्ति–व्यक्ति. शान्ति. ६
चेतन द्रव्यनुंरे, करवुं ध्यान ज जावे;
चंचलता हरेरे, साची शान्ति आवे. शान्ति. ७
सत्य–समाधिमांरे, शान्ति सिद्धि बतावे;
रसिया योगियोरे, शान्ति साची पावे. शान्ति. ८

सिद्धसमा थइरे, शान्तिरूप सुहावे;
स्थिरउपयोगथीरे, बुद्धिसागर पावे.   शान्ति. ९



१७ कुंथुनाथस्तवन.

(सांभळजो मुनि--ए राग.)

कुंथुजिनेश्वर जगजयकारी,
चोत्रीस अतिशय धारीरे;
पांत्रीस वाणी गुणथी शोभे,
समवसरण सुखकारीरे.   कुंथु० १

वस्तुधर्म स्याद्वाद् प्ररुपे,
केवलज्ञानथी जाणीरे,
धर्म ग्रही पाळी शिव लेवे,
जगमांहि बहु प्राणीरे.   कुंथु० २

सप्तभंगी ने सातनयोथी,
षड्द्रव्योने जणावेरे;
उपादेय चेतनना धर्मो,
बोधी शिव परखावेरे.   कुंथु० ३

शुद्धं आत्मस्वरूप बतावी,
मिथ्या--भ्रमणा हठावेरे;
अस्ति नास्तिमयधर्म अनन्ता,
द्रव्य द्रव्यमां भावेरे. . कुंथु० ४

चार निक्षेपे चार प्रमाणे,
वस्तु स्वरूपने दाखेरे;
द्रव्य क्षेत्र ने काल भावथी,
वस्तु स्वरूपने भाखेरे. कुंथु० ५

आनन्दकारी जग हितकारी,
गुण पर्यायाधारोरे;
उत्पत्ति--व्यय--ध्रुवतामयी प्रभु,
शाश्वतपद सुखकारीरे. कुंथु० ६

जिनस्वरूप थइ जिनवर सेवी,
लहीए अनुभव मेवारे;
बुद्धिसागर ज्ञान दिवाकर,
सहज योग पदसेवारे. कुंथु० ७

१८ अरनाथस्तवन.

(तुम बहु मंत्रीरे साहिबा—ए राग.)

अराजिनवर ! प्रभु ! वन्दना, होजो वारंवार;
क्षायिक–रत्नत्रयी वर्यो, शुद्ध बुद्धावतार. अर. १
अष्टकर्मना नाशथी, अष्ट गुणोने धरंत;
गुण एकत्रीशने तें धर्या, साध्यसिद्धि वरंत. अर. २
क्षपकश्रेणि–रणक्षेत्रमां, हण्यो मोह प्रचंड;
त्रिभुवनमां साम्राज्यनी, चलवी आण अखंड. अर. ३
घातिकर्म–प्रकृति हरी, पाम्या केवलज्ञान;
पुरुषोत्तम अरिहाप्रभु, दीधुं देशना दान. अर. ४
योगविकार शमावीने, शेष कर्म जे चार;
हणीने शिवपुर पामिया, धन्य ! धन्य ! अवतार. अर. ५
तुज पगले अमे चालशुं, पामीने परमार्थ;
अनुभव रंगे भेटीने, प्रभु थइशुं सनाथ. अर. ६
प्रेम भक्ति उत्साहमां, श्रुतज्ञाने दिल लाय;
बुद्धिसागर ध्यानमां, प्रभुता घटमांहि पाय. अर. ७



१९ मल्लिनाथस्तवन.

(स्वामी सीमंधर विनति—ए राग.)

मल्लिजिन सहज स्वरूपनुं,
वर्णन कहो केम थायरे;
वैखरी वर्णन शुं करे,
कंइ परामांही परखायरे. मल्लि० १

परमब्रह्म पुरुषोत्तम,
अनंगो अनाशी सदायरे;
विमल परम वीतरागता,
अखय अचल महारायरे. मल्लि० २

निर्भय देशना वासी जे,
अजर अमर गुणखाणरे;
सहज स्वतंत्र आनन्दमां,
भोगवो शिव निर्वाणरे. मल्लि. ३

चेतन असंख्यप्रदेशमां,
वीर्य अनंत प्रदेशरे;
छति शुद्ध सामर्थ्य भावथी,
वापरो समये निःक्लेशरे. मल्लि० ४

त्रिभुवन मुकुट शिरोमणि,
परम महोदय धर्मरे;
जगगुरु परमबंधु विभु,
सादि–अनन्त सुशर्मरे. मल्लि० ५

अलख अगोचर दिनमणि,
अविचल पुरुष पुराणरे;
सत्य एक देव ! तुं जगधणी,
धारुं हुं शिर तुज आणरे. मल्लि० ६

मल्लिजिन शुद्ध आलंबने,
सेवक जिनपणुं पायरे;
बुद्धिसागर रस रंगमां,
भेटिया चिद्रू[illegible]यरे. मल्लि० ७

२० मुनिसुव्रतस्तवन.

(तार हो तार प्रभु ! मुज सेवक भणी–ए राग.)

तार हो तार प्रभु ! शुद्ध दिनकर विभु,
शरण तुं एक छे मुज स्वामी;
ज्ञान–दर्शनधणी, सुख ऋद्धि घणी,
नामी पण वस्तुतः तुं अनामी. तार० १

भोगी पण भोगना फंदथी वेगळो,
योगी पण योगथी तुं निराळो;
जाणतो अपरने अपरथी भिन्न तुं,
विगतमोही प्रभु! शिव म्हालो. तार० २

द्रव्य क्षेत्र अने काल ने भावथी,
आत्मद्रव्ये प्रभु! तुं सुहायो;
स्वगुणनी अस्तिता, नास्तिता परतणी,
शुद्धकारकमयो व्यक्ति पायो. तार० ३

शुद्ध परब्रह्मनी पूर्णता पामीने,
विष्णु जगमां प्रभु! तुं गवायो;
कर्मदोषो हरी हर प्रभु! तुं थयो,
सत्य महादेव तुं छे सवायो. तार० ४

शुद्धरूपे रमी राम तुं जग थयो,
शुद्ध आनन्दतानो विलासी;
रहेम करतां थयो शुद्ध रहेमान तुं,
शुद्ध चैतन्यता धर्मकाशी. तार० ५

नाम ने रूपथी भिन्न तुं छे प्रभु!
जाणतो तत्त्व स्याद्वादज्ञानी;

शरण तारुं ग्रह्युं, चरण तारुं लह्युं,
रही नहि वात हे नाथ ! छानी. तार० ६
भक्तिना तोरना जोरमां प्रभु मळया,
सहज आनंदना ओघ प्रगटया;
जाणुं पण कही शकुं केम निर्वाच्यने,
सकळ विषयोतणा फंद विघट्या. तार० ७
एकता लीनता भक्तिना तानमां,
घेन आनंदनी दिल छवाइ;
बुद्धिसागर प्रभु भेटिया भावथी,
मुक्तिनी घेर आवी वधाइ. तार० ८

---

२१ नमिनाथस्तवन.

(ए गुण वीरतणो न विसारुं—ए राग.)

नमि जिनवर ! प्रभु ! चरणमां लागुं,
शुद्ध रमणता मागुंरे;
बाह्य परिणति टेव निवारी,
शुद्धोपयोगे जागुंरे; नमि० १

अन्तरदृष्टि अमृतवृष्टि,
सहजानन्द स्वरूपरे;
तन्मयता प्रभु साथे करती,
शुद्ध समाधि अनुपरे. नमि० २

असंख्यप्रदेशी चेतन क्षेत्र,
गुण अनंत आधाररे;
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता समये,
द्रव्यपणुं जयकाररे. नमि० ३

ज्ञान-चरणपर्यायनी शुद्धि,
मुक्ति प्रभु मुख भाखेरे;
अस्ति नास्तिनो सप्त भंगोथी,
षड् द्रव्योने दाखेरे. नमि० ४

शब्दादिक नय शुद्ध परिणति,
उत्तर उत्तर साररे;
कारणे कार्यपणुं नीपजावे,
द्रव्यभावे निर्धाररे. नमि० ५

निमित्त पुष्टालंबन सेवी,
उपादान गुण शुद्धिरे;

शुद्ध रमणता योगे करतो,
पामे क्षायिक ऋद्धिरे. नमि० ६
सुखसागर कल्लोले चढियो,
लही सामर्थ्य पर्यायरे;
शुद्ध परिणति–चंद्र प्रकाशे,
आनन्द क्यांय न मायरे. नमि० ७
शुद्ध परिणति–चरण शरणमां,
शुद्धोपयोगे रहीशुंरे;
बुद्धिसागर ज्ञानादिवाकर,
स्वपर प्रकाशी थइशुंरे. नमि० ८

२२ नेमिजिनस्तवन.

(तुम बहु मंत्री रे साहिबा–ए राग.)

नेमिजिनेश्वर ! वन्दना, होशो वार हजार;
त्रिकरणयोगेरे सेवना, प्रीति-भक्ति उदार. ने० १
सालंबन ध्याने प्रभु ! दीलमां आवो सनाथ;
उपयोगे तुज धारणा, आवागमन ते नाथ ! ने० २
नामादिक निक्षेपथी, आलंबन जयकार;
निरालंबन कारणे, तुज व्यक्ति सुखकार. ने० ३

सविकल्प समाधिमां, ज्ञासो हृदय मझार;
अन्तरअनुज्ञव–ज्योतमां, निर्विकल्प विचार. ने० ४
भेदाभेद स्वभावमां, अनन्त गुण–पर्याय;
छति सामर्थ्य पर्यायनी, शक्ति–व्यक्ति सुहाय. ने० ५
झळहळज्योति ज्यां जागती, ज्ञासे सर्वपदार्थ;
बुद्धिसागर ज्ञानमां, सिद्ध बुद्ध परमार्थ. ने० ६

२३ पार्श्वनाथस्तवन.

(साहिब सांभळोरे संभव–ए राग.)

पूर्णानन्दमांरे, पार्श्वप्रभु ! जयकारी;
ध्रुवता शुद्धतारे, शाश्वत सुख ज्ञंडारी. पूर्णा० १
केवलज्ञानथीरे, लोकालोक प्रकाशो;
ध्याता ध्यानमांरे, साहिब! निज घर वासो. पूर्णा० २
सहजानन्दनारे, समये समये भोगी;
रत्नत्रयी प्रभुरे ! क्षायिक गुणगणयोगी. पूर्णा० ३
व्यक्ति तुजसमीरे, भक्ति तुज मुज करशे;
तुज आलंबनेरे, चेतन शिवपुर ठरशे. पूर्णा० ४
साचा ज्ञावथीरे, जिनवरसेवा करशुं;
शुद्धस्वभावमांरे, क्षायिकसद्गुण वरशुं. पूर्णा० ५

झटपट त्यागीनेरे, खटपट मननी काची;
मळशुं भावथीरे, अनुभव युक्ति ए साची. पूर्णा० ६
हळियो देवशुंरे, ते जन शिवसुख पावे;
साची भक्तिथीरे, आविर्भाव सुहावे. पूर्णा० ७
पास जिनेश्वरारे, आपोआप स्वभावे;
आतमभावथीरे, बुद्धिसागर गावे० ८

२४ महावीरस्तवन.

(साहिब सांभळोरे संभव अरज हमारी
ए राग.)

श्रीमहावीर प्रभुरे ! लळी लळी पाये लागुं;
श्रीमहावीरपणुंरे, प्रभु ! तुज पासे मागुं. श्री. १
द्रव्यभाव बे भेदथीरे, निक्षेपे तेम जाणो;
सात नयोवडेरे, महावीर मनमां आणो. श्री. २
नवधा भक्तिथीरे, महावीरप्रभुथी हळशुं;
स्वजाति ध्यानथीरे, आविर्भावे मळशुं. श्री. ३
श्रुतउपयोगथीरे, प्रगटे वीर्य स्वभावे;
ध्रुवता योगनीरे, महावीर घटमां आवे. श्री. ४

धातोधातथीरे, हळतां मळतां शान्ति;
शुद्धस्वभावमांरे, रमतां, लेश न ब्रान्ति. श्री. ५
सत्ताए रहीरे, वीरता ध्याने प्रगटे;
शब्दादिकनयेरे, कर्म मलीनता विघटे. श्री. ६
अनुभवयोगमांरे, महावीर नयणे देखे;
मिथ्यामोहनेरे, आपस्वभावे उवेखे. श्री. ७
शुद्धस्वजावमांरे, महावीरप्रभु घर आवे;
वीर्य अनन्ततारे, बुद्धिसागर पावे. श्री. ८

कलश.

गाइ गाइरे ए जिनवर चोविशी गाइ.
अन्तर–अनुजवयोगे रचना,
जिनआणाथी बनाइरे. ए जि.
जिनभक्तिथी शक्ति प्रगटे,
प्रगटे शुद्ध समाधि;
मिथ्या–मोहक्षये समकितगुण,
नासे चित्तनी आधिरे. ए जि. १
जिनगुणना उपयोगे निजगुण,
प्रगटे अनुजव साचो;

तिरोभावनो आविर्भाव छे,
प्रेम धरी त्यां राचोरे. ए जि. २
अनेकान्तनय–ज्ञानप्रतापे,
पंचाचारनी शुद्धि;
उपशम क्षयोपशम ने क्षायिक,
भावे प्रगटे ऋद्धिरे. ए जि. ३
प्रभुगुण गावे ज्ञावना भावे,
नागकेतुपरे मुक्ति;
शुद्ध रमणता भावपूजा छे,
सालंबननी युक्तिरे. ए जि. ४
सालंबन योगी जिनध्याने,
निरालंबन थावे;
कारण–कार्यपणुं त्यां जाणो,
ज्ञानी हृदयमां ज्ञावेरे. ए जि. ५
जिनभक्ति निजशक्ति वधारे,
शुभउपयोगना दावे;
शुद्धोपयोगे सहेजे आवे,
स्याद्वादी मन भावेरे. ए जि. ६

गाम डभोइ यशोविजय गुरु,
चरणनी यात्रा कीधी;
उपाध्यायनी देरीमां रचना,
पूर्ण चोवीशीनो सिद्धिरे. ए जि. ७

उपाध्याय गुरु—चरण पसाये,
भक्ति—रंग उर धारी;
भावपूजा जिनवरनी करतां,
जयजय मंगलकारीरे. ए जि. ८

संवत ओगणिशपांसठसाले,
फाल्गुनपूर्णिमा सारी;
रविवार दिन चढते पहोरे,
पूर्ण रची जयकारीरे. ए जि. ९

लोढणपार्श्वजिनेश्वर प्रेमे,
जे भणशे नरनारी;
बुद्धिसागर पग पग मंगल,
पामे संघ निर्धारीरे. ए जि. १०

महावीर प्रभुस्तवन.

प्रभु महावीर जिनवर देव हो राज!
ताहरे शरणे आव्यो,

तारो तारो प्रभु मुज तारो हो राज;
तुज श्रद्धा दिल लाव्यो.
सात्विक पराशक्तिए प्रगटो,
मन मंदिरमां पधारो;
तुज वण बीजुं जगमां न इच्छुं,
भावे मुजने सुधारो हो राज. ताह्यरे. प्रभु. १
जेवो तेवो पण हुं तुं तारो,
मुजने पार उतारो;
प्राणांते पण पकड्या न छोडुं,
उधर्यो वण नही आरो हो राज. ता. प्रभु. २
मागण पेठे हुं नहीं मागुं,
तुं छे प्राणथी प्यारो;
तुज स्वरूप थै रहेवुं ए निश्चय,
विनतडी अवधारो हो राज. ता. प्रभु. ३
माह्यरुं त्हारुं रूप न जूदुं,
हवे न जाउ हुं हार्यो;
आतम ते परमातम नक्की,
निश्चय एवो धार्यो हो राज. ता. प्रभु. ४

आतममां आनंद प्रगटावो,
जन्म मरण दुःख वारो;
बुद्धिसागर आत्म महावीर,
प्यारामां तुं प्यारो हो राज.   ता. प्रभु. ५

श्री सुखसागरगुरुस्तवन.

नाथ कैसे गजको बंध छुडायो. ए राग.

नमुं मुनि सुखसागर गुरु राया,
सुरनर मुनि गुण गाया.   नमुं.
वैयावच्चो शांत दांत संत,
जीवदया गुण दरिया;
पंचमहाव्रत पालन पूरा,
सागर उपमा वरिया.   नमुं. १
विद्यमान मुनि संघ सवाया,
सरल स्वभावे सुहाया;
पंच समिति धारक शूरा,
गुप्तिए योगी गवाया.   नमुं. २
गुरु वैयावच्चो प्रेमी पूरा,
उत्तम पदवी पाया;

समता गंगा नीर वहाया,
सेवक एमां न्हाया. नमुं. ३

प्रभुमां लीन करी मन जोड्या,
रागने रोष समाया.
बाल्यथकी ब्रह्मचारी साचा,
धर्म कमाणी कमाया. नमुं. ४

ओगणिश अगन्योत्तर चोमासुं,
अमदावादमां आव्या;
अषाढ वदि त्रीज सूर उगमे,
ध्याने स्वर्ग सिधाव्या. नमुं, ५

गुरु गुण गावुं गुरु दिल ध्यावुं,
गुरु गुण जगमां छवाया;
गुरु कृपाए आतम अनुभव,
पाया प्रभु प्रगटाया, नमुं. ६

स्हाय करो गुरु शिष्यने प्रेमे,
गुरु नाम जाप जपाया;
बुद्धिसागर सद्गुरु ध्याया,
मेसाणा गुणगाया. नमुं. ७

सं. १९७८ आषाढ शुक्ल तृतीया. गुरुजयंतीगान.

ॐ अर्ह महावीर शांतिः ३